RNI No.10742/1957

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:57, Issue: 03,
August - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

अगस्त-2026

रु.20/-





तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का सालकट्ल ब्रह्मोत्सव

2026 सितंबर 14 से 23 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
14-09-2026	सोमवार	- - -	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
15-09-2026	मंगलवार	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
16-09-2026	बुधवार	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
17-09-2026	गुरुवार	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
18-09-2026	शुक्रवार	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
19-09-2026	शनिवार	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुड़वाहन
20-09-2026	रविवार	हनुमद्वाहन, सा.वसंतोत्सव	गजवाहन
21-09-2026	सोमवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
22-09-2026	मंगलवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
23-09-2026	बुधवार	चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।



(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग 2-42,43,44)

हे अर्जुन! जो भोगों में तन्मय हो रहे हैं, जो कर्मफल के प्रशंसक वेदवाक्यों में प्रीति रखते हैं, जिनकी बुद्धि में स्वर्ग ही परम प्राप्य वस्तु है और जो स्वर्ग से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु ही नहीं है - ऐसा कहनेवाले हैं - वे अविवेकी जन इस प्रकार की जिस पुष्पित यानी दिखाऊ शोभायुक्त वाणी को कहा करते हैं जो कि जन्मरूप कर्मफल देनेवाली एवं भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये नाना प्रकार की बहुत-सी क्रियाओं का वर्णन करनेवाली है, उस वाणी द्वारा जिनका चित्त हर लिया गया है, जो भोग और ऐश्वर्य में अत्यन्त आसक्त हैं, उन पुरुषों की परमात्मा में निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती।



चूचे चूपोकटि गुरियो कटि
चाचि रेंडू नोकटैते दैवमे सुंडी ।।चूचे।।

एनुगु दलचिते एनुगै पोडसूपु
मानु दलचिते नट्टे मानै पोडचूपु
पूनि पेद्द कोंड तलपोय कोंडे पोडचूपु
ताने मनोगोचरुडु दैवमे सुंडी ।।चूचे।।

बट्टबयलु दलच बयलै पोडचूपु
अट्टे यंबुंधि दलच नंबुधियै पोडचूपु
पट्टणमु दलचिन पट्टणमै पोडचूपु
तट्टि मनोगोचरुडु दैवमेसुंडी ।।चूचे।।

श्री वेंकटाद्रि मीदि श्रीपति दलचितेनु
श्री वेंकटाद्रि श्रीपतै पोडचूपु
भावमे जीवात्म, प्रत्यक्षमु परमात्म
तावु मनोगोचरुडु दैवमे सुंडी ।।चूचे।।

साधक की दृष्टि और लक्ष्य एक हो, तो उसी रूप में परमात्मा का साक्षात्कार अवश्य होगा। परमात्मा को अगर 'गजराज' समझा जाय, तो वे गजराज बनकर सामने आते हैं। अगर उन्हें महावृक्ष के रूप में देखेंगे, तो वे महान वृक्ष बन जाते हैं। महान पर्वत के रूप में भावना करेंगे, तो भगवान महान पर्वत बन जाते हैं। खुली प्रकृति में, जलनिधि में उनके अस्तित्व का अनुभव चाहें, तो उसी तरह पा सकते हैं। उन्हें एक महानगर मानेंगे, तो उसी रूप में उनका साक्षात्कार हमें होगा। श्री वेंकटाद्रि पर स्थित श्री वेंकटेश के रूप में उनकी उपासना करेंगे, तो वैसे ही हमें दर्शन देंगे। हमारी भावना ही जीवात्मा है तथा हमें साक्षात्कार होनेवाला रूप परमात्मा है। इसका तात्पर्य है, 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी, तिन जैसी।'

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण



♦ 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।

♦ 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ (EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।

♦ चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।

♦ अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।

♦ अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।

♦ सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।





सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-57 अगस्त-2026 अंक-03

विषयसूची

गरुड़ पंचमी	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	07
श्रीवरलक्ष्मी व्रत	डॉ.बी.के.माधवी	11
श्री लक्ष्मी हयग्रीव स्वामी	डॉ.बी.ए.वी.वर्मा	14
श्रावण-पूर्णिमा का रक्षा-बन्धन	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	16
गायत्री मंत्र का वैभव	श्रीमती प्रेमा वर्धन	19
वैखानस आगम परिचयक श्री विखनसमुनि	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	22
श्री रामानुज नूट्न्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
श्रीवरमहालक्ष्मी व्रत पूजा का विधि-विधान	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	27
'ओणम' एक फसल उत्सव	डॉ.एच.एन.गौरीराव	37
श्री चक्रत्ताल्वार का जन्मोत्सव	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	41
अगस्त महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	46
नीतिकथा - दो अजीब सवाल	श्री के.रामनाथन	47
चित्रकथा - दुश्मन से दोस्ती एक हद तक	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 49		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी।

चौथा कवर पृष्ठ - श्री वल्ली देवसेना सहित षण्मुख स्वामी का वर्णचित्र।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

सृष्टि का सबसे मधुर बंधन...!

जिस व्यक्ति को देखकर, जिसका स्मरण करके, जिसकी बातें सुनकर अथवा जिससे संवाद करके मन प्रसन्नता और शांति का अनुभव करे, वही सच्चा मित्र कहलाने योग्य है। रामायण में मित्रता के इसी दिव्य स्वरूप का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। विशेष रूप से किष्किंधा काण्ड में मित्रता के अनेक अनुपम आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं।

हनुमान जी जब श्रीराम और लक्ष्मण को सुग्रीव के पास लेकर गए और उनका परिचय कराया, तब अपने बड़े भाई वाली के भय से व्याकुल जीवन व्यतीत कर रहे सुग्रीव को अपार संतोष मिला। उन्होंने श्रीराम से कहा ''यदि आपको मेरी मित्रता स्वीकार हो तो यह मेरा हाथ है, आइए हाथ मिलाकर आजीवन मित्रता का बंधन स्थापित करें।'' श्रीराम ने भी प्रसन्नतापूर्वक उनका हाथ थाम लिया। हनुमान जी ने स्वयं अग्नि की स्थापना की और उसी अग्नि को साक्षी मानकर श्रीराम और सुग्रीव ने मैत्री की प्रतिज्ञा की। सुग्रीव ने कहा, ''अब हम मित्र हैं। तुम्हारा सुख मेरा सुख है और तुम्हारा दुःख मेरा दुःख।''

दोनों ने एक-दूसरे के मन की व्यथा साझा की। जब श्रीराम माता सीता के वियोग में दुःखी थे, तब सुग्रीव ने अत्यंत आत्मीयता से कहा, ''मैं उपदेश नहीं दे रहा, मित्र होने के नाते तुम्हारा हित चाहता हूँ। हमारी मित्रता का मान रखते हुए शोक का त्याग करो।'' सच्चे मित्र वही होते हैं जो संवेदना और सद्भावना के साथ उचित मार्गदर्शन दें।

जब श्रीराम के बाण से वाली का वध हुआ, तब यद्यपि यह घटना सुग्रीव की इच्छा के अनुरूप थी, फिर भी अपने भाई की मृत्यु से उनके मन में अपराधबोध उत्पन्न हो गया। उन्होंने श्रीराम से कहा कि वे स्वयं को इस मृत्यु का कारण मानते हैं और अग्नि में प्रवेश करना चाहते हैं। सामान्य व्यक्ति ऐसी स्थिति में क्रोधित या असहज हो सकता था, परंतु श्रीराम ने अपने मित्र की मनःस्थिति को समझा। उन्होंने कोई कठोर शब्द नहीं कहा; वे स्वयं भी दुःखी हो उठे और मित्र की पीड़ा में सहभागी बने। यहाँ श्रीराम की सहनशीलता और मित्र के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती है। दुनिया में अनेक लोग कहते हैं - ''मुझे समझो, मुझे समझो'', लेकिन स्वयं दूसरों को समझने का प्रयास नहीं करते। वास्तव में किसी को समझना केवल उसकी बातें सुन लेना नहीं है; उसके मन की स्थिति को पहचानना और समयानुकूल धैर्य रखना भी उतना ही आवश्यक है। मित्र की कमजोरियों को क्षमा करना और हर परिस्थिति में उसका साथ देना ही सच्ची मित्रता है। चाहे मित्र समृद्ध हो या निर्धन, सुखी हो या दुःखी, निर्दोष हो या त्रुटियों से युक्त - उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। रामायण हमें यही शिक्षा देती है।

जब सुग्रीव राज्याभिषेक के बाद राजसुखों में व्यस्त होकर श्रीराम के कार्य को कुछ समय के लिए भूल गए, तब भी श्रीराम ने लक्ष्मण को उनके पास भेजते हुए स्पष्ट कहा कि उनसे कठोर शब्द न कहे जाएँ। यह मित्रता के प्रति श्रीराम के सम्मान और मर्यादा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मित्र बनाना कठिन नहीं है, परंतु उस संबंध को जीवनभर निभाना निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण है। मन यदि चंचल हो जाए तो छोटी-छोटी बातों से भी मित्रता में दरार पड़ सकती है। इसलिए मैत्री का बंधन अत्यंत पवित्र और अमूल्य धरोहर है। इसे प्रेम, विश्वास, धैर्य और समर्पण के साथ सहेजकर रखना चाहिए। वास्तव में सच्ची मित्रता सृष्टि के सबसे मधुर उपहारों में से एक है।



गरुड़ पंचमी

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

गरुड़ पंचमी, हिंदू पंचांग के अनुसार श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाने वाला एक विशेष त्योहार है। यह पर्व भगवान विष्णु के दिव्य वाहन और पक्षीराज गरुड़ के जन्म, उनकी वीरता और माता के प्रति उनकी असीम भक्ति को समर्पित है।

यह पर्व मुख्य रूप से माताओं और बच्चों के बीच के प्रेम और समर्पण का प्रतीक माना जाता है।

गरुड़ पंचमी की पौराणिक कथा

1) कद्रू और विनता की शर्त :

पौराणिक कथाओं के अनुसार, महर्षि कश्यप की दो पत्नियाँ थीं विनता और कद्रू। कद्रू नागों (सांपों) की माता थीं और विनता पक्षीराज गरुड़ की माता थीं। एक दिन, देवराज इंद्र के दिव्य घोड़े 'उच्चैःस्रवा' के रंग को लेकर दोनों पत्नियों में विवाद हो गया। विनता ने बताया कि घोड़े की पूंछ का रंग सफेद है, जबकि कद्रू का कहना था कि वह काली है। इस पर कद्रू ने विनता के साथ एक शर्त लगाई कि जो भी गलत साबित होगी, वह विजेता की दासी बन जाएगी।

2) कद्रू का छल और विनता की गुलामी :

कद्रू ने अपने नाग पुत्रों से कहा कि वे घोड़े की पूँछ पर लिपट जाएं जिससे वह काली दिखाई दे। जब दोनों घोड़े को देखने गईं, तो विनता को पूँछ काली दिखाई दी और वह छल हार गईं। इस हार के कारण विनता को कद्रू की दासी बनना पड़ा।

3) गरुड़ का जन्म और पराक्रम :

विनता ने एक विशाल अंडे को जन्म दिया। माना जाता है कि 500 वर्षों तक अंडे से कोई उत्पत्ति न होने पर, अधीर होकर विनता ने अंडे को तोड़ दिया। उसमें से आधे मनुष्य और आधे पक्षी के रूप में अत्यंत तेजस्वी गरुड़ उत्पन्न हुए। जब गरुड़ को अपनी माता की गुलामी और नागों द्वारा किए गए छल का पता चला, तो उन्होंने नागों से अपनी माता को मुक्त कराने का उपाय पूछा।

4) स्वर्ग से अमृत लाना :

नागों ने शर्त रखी कि यदि वे (गरुड़) स्वर्ग से देवताओं का अमृत लाकर उन्हें दे देंगे, तो उनकी माता को गुलामी से मुक्ति मिल जाएगी। अपनी माता के उद्धार के लिए गरुड़ ने सभी देवताओं को परास्त कर दिया और स्वर्ग से अमृत कलश ले आए।

5) भगवान विष्णु की कृपा

जब गरुड़ अमृत लेकर नागों के पास पहुँचे, तो भगवान इंद्र ने उनसे विनती की कि वे नागों को अमृत न दें क्यों कि वे इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। तब गरुड़ ने बड़ी चतुराई से अमृत कलश नागों को सौंपने से पहले उन्हें शुद्ध होने के लिए कहा। नाग जैसे ही स्नान करने गए, गरुड़ वहाँ से अमृत कलश वापस ले आए, जिससे नागों को अमृत नहीं मिल पाया।

6) गरुड़ की माता भक्ति से प्रसन्नता

अमृत प्राप्त करने के बावजूद गरुड़ ने उसका सेवन नहीं किया। उनकी इस निस्वार्थ भक्ति और माता प्रेम को देखकर भगवान विष्णु अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें अपना वाहन बनाने का वरदान दिया।

7) वैदिक स्वरूप

वेदों में गरुड़ को 'वेद स्वरूप' माना गया है। माना जाता है कि जब वे अपने पंख फड़फड़ाते हैं, तो सामवेद के मंत्रों की ध्वनि उत्पन्न होती है।



पर्व का महत्व

गरुड़ पंचमी के दिन भगवान गरुड़ और नागों की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन गरुड़ की पूजा करने से सर्प भय, विषबाधा और किसी भी प्रकार के नाग दोष से मुक्ति मिलती है।

गरुड़ पंचमी माहात्म्य

गरुड़ पंचमी के दिन भगवान गरुड़ और नागों की पूजा की जाती है।

1) सर्प भय विषबाधा से मुक्ति

ऐसी मान्यता है कि इस दिन गरुड़ की पूजा करने से सर्प भय, विषबाधा से मुक्ति मिलती है।

2) साहस और शक्ति की प्राप्ति

गरुड़ को बल, पराक्रम और निर्भीकता का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन उनकी पूजा करने से भक्तों को जीवन की बाधाओं और नकारात्मक ऊर्जाओं से लड़ने का साहस मिलता है।

3) नाग दोष से मुक्ति

गरुड़ को नागों का शत्रु और रक्षक दोनों माना जाता है। इस दिन गरुड़ और नागों की संयुक्त पूजा से कुंडली में मौजूद सर्प दोष और कालसर्प दोष का प्रभाव कम होता है।

4) सुखी वैवाहिक जीवन और संतान

विवाहित महिलाएँ इस दिन व्रत रखकर सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करती हैं। ऐसी मान्यता है कि गरुड़ देव की कृपा से भक्तों को पराक्रमी और उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

5) विष्णु कृपा की प्राप्ति

गरुड़ भगवान विष्णु के अनन्य भक्त हैं। उनकी पूजा करने से सीधे तौर पर श्रीहरि की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होता है।

गरुड़पूजा और अनुष्ठान के शक्तिशाली मंत्र

भगवान विष्णु के वाहन और पक्षियों के राजा गरुड़ जी से जुडे मंत्र बहुत ही शक्तिशाली माने जाते हैं। गरुड़ संजीवनी मंत्र का उपयोग नकारात्मक ऊर्जा, विष (सर्प दोष) और गंभीर रोगों से रक्षा के लिए किया जाता है, खास करके गरुड़पूजा में भी उपयोग किया जाता है।

जबकि सामान्य गरुड़ मंत्र का प्रयोग दैनिक सुरक्षा और भय निवारण हेतु होता है।

1) गरुड़ संजीवनी मंत्र

यह मंत्र बहुत ही चमत्कारी माना जाता है। मान्यता है कि इसके जाप से भय, सर्प दोष और रोगों का नाश होता है।

मंत्र : *''यक्षि ओम उं स्वाहा।''*

(सूचना : गरुड़ पुराण में इस संजीवनी विद्या/मंत्र का विशेष महत्व बताया गया है।)

2) गरुड़ सामान्य मंत्र

(मंत्रराज) यदि आप दैनिक रूप से गरुड़ भगवान की आराधना करना चाहते हैं, तो इस सामान्य या बीज मंत्र का जाप कर सकते हैं।

मंत्र : *ॐ वायुवेगाय गरुणवीर सिद्धि हुं फट्।*

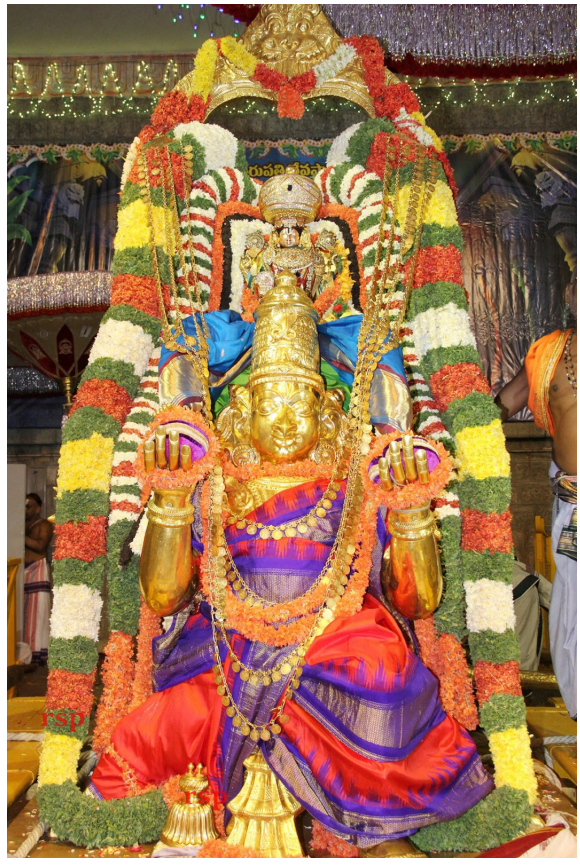
3) गरुड़ गायत्री मंत्र

(शक्ति और सुरक्षा के लिए) भगवान गरुड़ का आशीर्वाद पाने और बुद्धि-बल की प्राप्ति के लिए गरुड़ गायत्री मंत्र का जाप अत्यंत उत्तम है।

मंत्र : *''ॐ पक्षिराजाय विद्महे पक्षिदेवाय धीमहि।*
तन्नो पक्षिः प्रचोदयात्।।''

ये एक और भी गरुड़ गायत्री मंत्र

बुद्धि, स्पष्टता और अच्छे स्वास्थ्य के लिए किया जाता है :



''ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि।
तन्नो गरुड़ः प्रचोदयात्।।''

सावधानी और नियम

इन मंत्रों का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए शुद्ध मन से, रुद्राक्ष या तुलसी की माला का उपयोग करके और ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए 108 बार जाप करना श्रेष्ठ माना जाता है।

गरुड़जी की विशेष कृपा प्राप्त करने हेतु स्तुति प्रार्थना ओर स्तोत्र

1) गरुड़ स्तुति एवं प्रार्थना

विष, भय और बुरी नज़र से रक्षा के लिए इस मंत्र का प्रयोग किया जाता है।

''ॐ नमो भगवते गरुड़ाय, महेन्द्ररूपाय पर्वतशिखाकाररूपाय, संहर संहर, मोचय मोचय,

चालय चालय, पातय पातय, निर्विष विषमप्यमृतं चाहारसदृशं रूपमिदं प्रज्ञापयामि स्वाहा नमः।''

2) गरुड़ स्तोत्र (द्वादश नाम)

गरुड़ पुराण और अन्य ग्रंथों में उनके 12 शक्तिशाली नामों का उल्लेख है। प्रतिदिन इनका स्मरण करने से सभी कार्य सिद्ध होता हैं :

''सुपर्णो वैनतेयश्च नागारिर्नागभीषणः।
जितान्तको विषारिश्च अजितो विश्वरूपिणः।।
गरुत्मन् खगश्रेष्ठस्तार्क्ष्यः कश्यपनन्दनः।
द्वादशैतानि नामानि गरुड़स्य महात्मनः।।''

लाभ

इन 12 नामों का पाठ करने से सर्प भय और विष दोष खत्म होता है, साथ ही शत्रु और हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है।

कैसे मनाई जाती है गरुड़ पंचमी?

विशेष पूजा विधि इस प्रकार है

1) तैयारी और संकल्प

सुबह प्रातःकाल उठकर स्नान करें और स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल को साफ करके एक चौकी पर लाल या पीला वस्त्र बिछाएँ।

2) मूर्ति स्थापना

चौकी पर भगवान विष्णु और गरुड़ जी की मूर्ति या चित्रपठ स्थापित करें। यदि गरुड़ जी की मूर्ति न हो, तो आप भगवान विष्णु की ऐसी तस्वीर का उपयोग कर सकते हैं जिसमें गरुड़ जी उनके साथ हों।

3) पूजन सामग्री और अर्पण

विधि-विधान से जल, रोली, अक्षत (चावल) और मौली अर्पित करें। भगवान विष्णु को पीले फूल, तुलसी दल और गरुड़ जी को पीले या लाल फूल चढ़ाएँ। नैवेद्य (भोग) में फल, मिष्ठान या खीर अर्पित करें और धूप-दीप जलाएँ।

4) मंत्र जाप और कथा

गरुड़ जी को बल और साहस का प्रतीक माना जाता है। पूजा के दौरान ''ॐ गरुड़ाया नमः'' का जाप करें। भगवान विष्णु के मंत्र ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' का 108 बार जाप करना अत्यंत शुभ होता है। गरुड़ पंचमी की व्रत कथा अवश्य सुनें या पढ़ें।

5) पूजा समापन

अंत में कपूर या घी के दीपक से आरती करें और क्षमा प्रार्थना करें।

विशेष लाभ और महत्व :

इस दिन गरुड़ जी की पूजा करने से कालसर्प दोष, राहु-केतु दोष और सर्प भय से मुक्ति मिलती है। मान्यता है कि इससे घर से नकारात्मक ऊर्जा और विषबाधा दूर होती है और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

दक्षिण भारत (विशेष रूप से तिरुमल) के मंदिरों में इस दिन वैभवोपेत रूप से गरुड़ वाहन सेवा का शोभायात्रा निकाली जाती है, जहाँ भगवान श्री वेंकटेश्वर को गरुड़ वाहन पर विराजमान होकर भक्तों को माड़ावीथियों में दर्शन देते है।

नाच्चियार कोइल में गरुड़सेवा के समय मंदिर से बाहर जाते समय गरुड़ का वजन बढ़ता है। जुलूस के बाद मंदिर के अंदर पहुँचते समय वजन कम होता है।

आइए! श्रीहरि विष्णु जी के साथ श्री गरुड़जी को साष्टांग दंडवत प्रणाम करें!



21-08-26 को वरलक्ष्मी व्रत के संदर्भ में...

श्रीवरलक्ष्मी व्रत

- डॉ.बी.के.माधवी

सिद्ध लक्ष्मीः मोक्ष लक्ष्मीः जयलक्ष्मीः सरस्वती।
श्रीलक्ष्मीः वरलक्ष्मी श्च प्रसन्ना मम सर्वदा।।

ऐश्वर्व की अधिष्ठानदेवता श्री महालक्ष्मी है। अमृत मंथन के समय में क्षीरसागर से उत्पन्न आदिशक्ति ही वरलक्ष्मी है। श्रीसूक्त में कीर्तित वैकुंठपुर साम्राज्ञी है। वरप्रदायनी के रूप में प्रसिद्ध विष्णुपत्नी है। अंधकार से रोशनी की ओर और दारिद्र्य से धन की ओर चलानेवाले तेजोमूर्ति है। चतुर्विध पुरुषार्थ के रूप में बताये गये धर्म, अर्थ, काम, मोक्षों का उस देवी के चतुर्भुज प्रतीक हैं। उस माता की पूजा करने से हमारी सारी इच्छाएँ पूरा हो सकती हैं। भक्तजनों की इच्छाओं को पूरा करके वर देनेवाली विश्वमाता वरलक्ष्मी, विष्णुपत्नी, अखिलवरप्रदाता है। भक्तजनों का विश्वास है कि हरदिन लक्ष्मीदेवी की प्रार्थना करने से संपदाएँ घर में स्थिर रहेगी। उगादि पर्व से तेलुगुवालों के त्योहार शुरू होते हैं। श्रीरामनवमी के बाद श्रावणमास में आनेवाले वरलक्ष्मी व्रत अत्यंत श्रेष्ठ है। स्त्रियों के लिए सौभाग्यदायिनी, श्रावण मास में वरलक्ष्मी व्रत को संपन्न करना अत्यंत शुभदायक है।

श्रावण मास अत्यंत पुण्यप्रद, विशिष्ट एवं पवित्र है। इस महीने में पूर्णिमा के दिन श्रवणा नक्षत्र युक्त होने ने कारण इस महीने को 'श्रावणमास' कहते हैं। स्त्रियों को संतान, सौभाग्य देनेवाली नागचतुर्थी, गरुड़ पंचमी, मंगलगौरी व्रत, वरलक्ष्मी व्रत आदि व्रत, नोम से परिपूर्ण मास ही श्रावणमास है। इसलिए स्त्रियों के लिए अत्यंत प्रामुख्यता रहे महीने के रूप में श्रावणमास आचरण योग्य हुआ है। मुख्य रूप से नव विवाहिता स्त्री अपने अपने सौभाग्य श्रेय के लिए श्रावणमास में हर मंगलवार मंगलगौरी व्रत का आचरण करती है। वायन भी देती है। इस प्रकार इस महीने में चार या पाँच हफ्तों से आनेवाले हर मंगलवार के दिन मंगलगौरी व्रतों के साथ... उसी श्रावणमास में पूर्णिमा के पहले आनेवाले शुक्रवार के दिन सभी धन-दौलत को देनेवाली श्री वरलक्ष्मी व्रत का आचरण भी करते हैं। नव

विवाहिता स्त्री ही नहीं अन्य पुण्य स्त्रियाँ, युवा लडकियाँ भी इस वरलक्ष्मी व्रत को अपने ही घर में आचरण करती हैं। इस प्रकार पूरे घर में मनाये जानेवाले व्रत ही 'वरलक्ष्मी व्रत' है।

वरलक्ष्मी के रूप में प्रसिद्ध लक्ष्मीदेवी श्रावणमास में प्रत्येक पूजाएँ स्वीकारती है। पूर्णिमा के पहले आनेवाले शुक्रवार के दिन विशिष्ट रूप में सारी स्त्रियाँ बहुत लगाव से मनानेवाले त्योहार वरलक्ष्मी व्रत है। पुराणों में बताया गया है कि स्वयं परमशिव ही पार्वतीदेवी को इस उपदेश के बारे में बताये हैं। जगन्माता पार्वतीदेवी ने ही पहली बार इस व्रत मनाकर नवरत्न खचित लंकानगर को संपदा के रूप में पायी है। सर्वसंपदाओं का मूल, सर्व सौभाग्य हेतु, इस वरलक्ष्मी व्रत है। इस व्रत का आरंभ वरलक्ष्मी देवी के ध्यान, आवाहनाओं से होता है। इसके बाद षोडशोपचार पूजा, अंगपूजा, अष्टोत्तर शतनामों से होता है। व्रत कथा पठन से परिसमाप्ति होती है।





व्रत कथा के संदर्भ में परमेश्वर ने पार्वतीदेवी को बताये गये ''चारुमति कथा'' को पढना है।

मगधदेश में कुंडिन नगर में चारुमति नामक ब्राह्मण स्त्री रहती थी। वह साधुशीली है। विनयविधेयताओं और भक्तिगौरवों से परिपूर्ण स्त्री है। पति - सास की सेवा करनेवाली पुण्यवती है। एक दिन प्रातःकाल वरलक्ष्मी देवी ने उसको सपने में साक्षात्कार होकर कहा कि ''श्रावणमास में आनेवाले शुक्रवार के दिन मेरी पूजा करने से सकल सौभाग्यों की सिद्धि हो सकती है। इससे वह अपने सह स्त्रियों को भी उस लक्ष्मी सौभाग्य की प्राप्ति दिलाने के लिए निस्वार्थचित्त मन से सपने का सारा वृत्तांत बतायी है। इससे उन सब स्त्रियाँ श्रावण शुक्रवार के दिन वरलक्ष्मी की पूजा करके सकल सौभाग्य, ऐश्वर्य, संपदाओं को प्राप्त करने धन्य हुए हैं।

इस वरलक्ष्मी व्रत को सारे स्त्रियाँ भक्ति श्रद्धाओं के साथ मनाते हैं, लेकिन तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी के मंदिर में एक प्रत्येक पद्धति में वरलक्ष्मी व्रत का आचरण किया जाता है। तिरुचानूर में वरलक्ष्मीव्रत वैभवोपेत रूप से, सामूहिक रूप से निर्वहण किया जाता है। उस दिन पद्मावती देवी को सुप्रभात सेवा के साथ जगाते हैं। पद्मावती देवी मंदिर के आस्थानमंडप में देवी को सोने की साडी से अलंकृत करते हैं। देवी को नौ ग्रंथियों से युक्त धागों से आराधना करते हैं। इसमें एक-एक

धागा एक-एक देवता के चिह्न के रूप में भावना करके पूजते हैं। इस त्योहार के दिन के आचार, मंदिर के अन्य साधारण आचरणों से भिन्न होता है।

तिरुचानूर के मंदिर में वरलक्ष्मी व्रत के दिन लक्ष्मीदेवी को आठ रूपों में पूजा करना यहाँ की विशिष्टता है। वही भाग्यलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, भूलक्ष्मी, प्रीतिलक्ष्मी, कीर्तिलक्ष्मी, शांतिलक्ष्मी, तुष्ठिलक्ष्मी, पुष्ठिलक्ष्मी जैसे नामों से अष्टलक्ष्मियों की अर्चना करते हैं। भक्तजनों का विश्वास यही था कि ऐसे पूजा करने से देश सुभिक्ष रहता है। व्रत में सारी स्त्रियाँ भाग लेकर वरलक्ष्मी देवी की कृपा का पात्र बनते हैं। पंडितजनों का मानना है कि हम घर में मनाये जानेवाले पूजा से बेहतर सामूहिक पूजा में ज्यादा फल मिलता है। इस में केवल हमारे क्षेम ही न रहकर समस्त जाति का श्रेय, देश का श्रेय भी इस संकल्प की पूजा में निहित है। पूजा विधि का पूरा होने पर पंडित लोग भक्तजनों को पुराणांतर्गत कथा को सुनाते हैं। भविष्योत्तर पुराण में भी इस कथा हमें दिखायी देती है। कोई भी उस माता को त्रिकरणशुद्धि से पूजा करेंगे तो सकल सौभाग्यों से विराजमान होने का विश्वास भक्त जनों के मन में हैं।

तिरुचानूर में वरलक्ष्मीव्रत के सायंकाल में श्री पद्मावती देवी को सोने के रथ में बिठाकर मंदिर की परिक्रमा करते हुए पवित्र मंदिर के माड़ावीथियों में जुलूस निकालते है। उस समय भक्तजन पद्मावती देवी के दर्शन करके आरती देते हैं। वेद पंडित वेदस्तोत्रों का पठन करते हुए, नृत्य, गान, संगीत, वाइद्यों की सेवाओं से पद्मावती देवी की जुलूस मंगलकर रूप से चालू होता है।

तिरुचानूर में अंगरंगवैभव रूप से होनेवाले इस वरलक्ष्मी व्रत उत्सव भक्तजनों की मनोकामनाओं को पूरा करने आनंद देती है।

किसी भी कारण वश भक्तजन अपने घर में या सामूहिक रूप से वरलक्ष्मी व्रत के दिन नहीं मना सके तो श्रावण मास में आनेवाले किसी भी शुक्रवार मना सकते है। सबका अधिनेत्री श्री



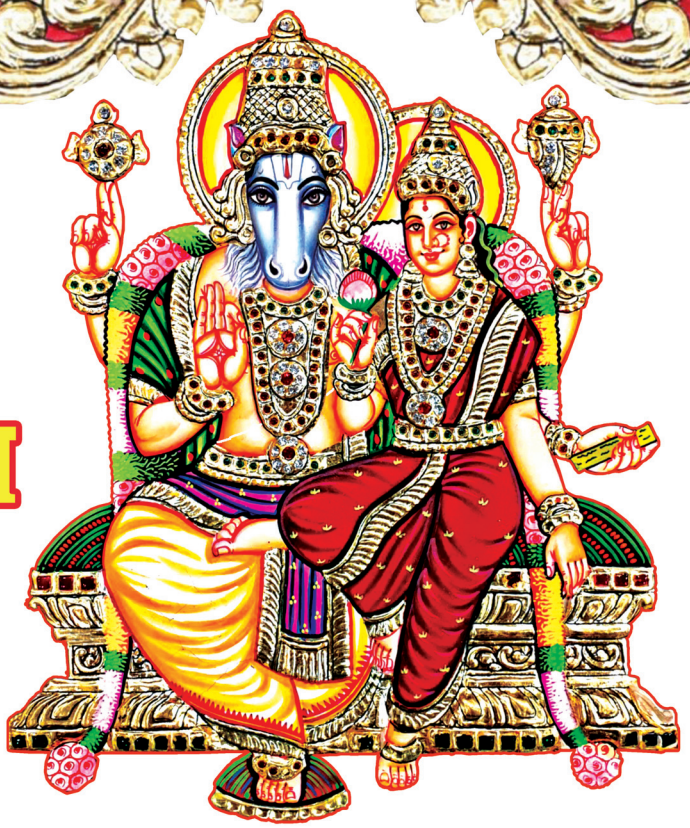
महालक्ष्मी देवी ही है। उनके अनुग्रह से ही सब प्राप्त हो सकता है। इसलिए वरलक्ष्मी देवी की पूजा करके उनके अनुग्रह के पात्र बनने में सफल हो जाने की कोशिश करेंगे।

इसलिए अन्नमाचार्य ने भी लक्ष्मी देवी की प्रार्थना करते हुए एक कीर्तन में गाया है -

जयलक्ष्मी, वरलक्ष्मी, संग्राम वीरलक्ष्मी
प्रियुरालवै हरिकि वेरसितिवम्मा..
पालजलनिधिलोन पसनैन मीगडा
मेलिमि तामेर लोन मिंचु वासना
नीलवर्णनुनीरूपमै निंडिन निधान मवै
एलेवु लोकमुलु मम्मेलवम्मा अम्मा।।

अखंडलक्ष्मी प्राप्ति रस्तु!
समस्तसन्मंगलानि भवंतु!!

श्री लक्ष्मी हयग्रीव स्वामी



28-08-26 को हयग्रीव जयंती के संदर्भ में...

- डॉ.बी.ए.वी.वर्मा

(स्वामी हयग्रीवा मेरे मन को स्पष्टता, वचन को मधुरता, बुद्धि को विवेक और हृदय को विनम्रता प्रधान करो) अपने भक्तों को हयग्रीव यह सन्देश देता है ''ज्ञान प्राप्त करो, विनय से उसे धर्म केलिए आचरण करो।'' हयग्रीव जयंती साधारण तया श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इसी दिन कई प्रांतों में रक्षा-बंधन को भी मनाते हैं।

पौराणिकता

हयग्रीव को विद्या देवता, सत्य स्वरूप, वेद रक्षक और ज्ञान प्रदाता मानते है।

कहा जाता है की सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्म से वेदों को मधु, कैटब नामक राक्षस चुराते है।

इसलिए अप्राप्ति वेदों से सृष्टि कार्य रुक गया। तब श्री महाविष्णु हयग्रीव रूप से राक्षसों को वध कर वेदों को ब्रह्म को सौंप दिया। हयग्रीव का मतलब ''अश्व सिर या अश्व कंठ वाला।''

अश्व सिर की विशेषता

शक्ति, तेज, अप्रमत्तता अश्व का संकेत माना जाता है।

अश्व सिर अज्ञान को शीघ्र दूर करने की शक्ति देती है। अश्व ध्वनि को शब्द की तेजता का संकेत आगम, वैष्णव साम्प्रदायों में करता है। उसके मुख से विकसित शब्द सर्व ज्ञान का मूल वेद स्वरूप को सूचित करता है।

वह मन पर काबू रखता है। हयग्रीव रूप भक्तों को यह सन्देश देता है की मन अश्व जैसा चंचल है उसे ज्ञान और साधना से नियंत्रण करे तो वह तुझे लक्ष्य तक पहुँचाता है।

तात्विकता

ज्ञान दैविक है। उसे रक्षण करना हमारा धर्म है। ज्ञान का मिलाप विनय से हो तो वह प्रज्ञा का रूप धारण करता है। वेदांत देशिका कहता है की हयग्रीव ज्ञान मूर्ति है (ज्ञानानंद मयम् देवम्) ''विद्या को हम केवल उपाधि निमित्त ही नहीं उसे सत्यान्वेषण और आत्मविकास का साधन मानना चाहिए'' यही हयग्रीव जयंती का सन्देश है। पूर्ण ज्ञान सिद्धि केलिए विद्या, विनय, विवेक का संगम अनिवार्य है।

पूजा - पाठ

ब्रह्म मुहूर्त में स्नान के बाद शुद्ध वस्त्रधारण करना चाहिए। हयग्रीव का चित्र या विग्रह प्रतिष्ठा करना चाहिए।

दीपाराधना के बाद विष्णु अष्टोत्तर या हयग्रीव अष्टोत्तर पढ़ना चाहिए। विद्या या ज्ञान चाहने वाले अपने पुस्तकों को हयग्रीव के सामने रखते आशीर्वाद लेना चाहिए। दाल - गुड़, खीर, दूध नैवेद्य करना चाहिए।

बौद्ध धर्म में भी हयग्रीव को दया और आध्यात्मिक परिरक्षक के रूप मानते है। हयग्रीव को अवलोकितेश्वर समझते आपत्तियों को और नकारात्मक शक्तियों से बचाने वाला समझता है।

हयग्रीवाराधना से - शास्त्राध्ययन में ज्ञान, वाक्शुद्धि, आध्यात्मिक ज्ञान, एकाग्रता, ज्ञान शक्ति वृद्धि, विद्या में पुरोगति प्राप्त होता है।

प्रसिद्ध हयग्रीव क्षेत्र

1) तिरुवहींद्रपुरम देवनाथस्वामी मंदिर, 2) परकाला मठ, 3) लक्ष्मी हयग्रीव मंदिर।

लक्ष्मी हयग्रीव मंदिर

चेन्नई से 180 किलोमीटर दूर कडलूर (दक्षिण चेन्नई) पर है। यहा हयग्रीव के साथ महालक्ष्मी की पूजा भी होती है।

परकाला मठ

यह कर्नाटक के मैसूर में प्रसिद्ध जगनमोहन पैलेस के पास है। यह बहुत प्रसिद्ध श्रीवैष्णव मठ है।

तिरुवहींद्रपुरम देवनाथस्वामी मंदिर

तमिलनाडु के कडलूर के 7 किलोमीटर दूर पर है। विद्या संबंधित एक प्रधान प्रार्थना स्थल है। यह हजार वर्ष पूर्व से पांड्य, चोल, होयसाला और विजयनगर राजाओं के पालन में भी था।

भक्तों को हयग्रीव का सन्देश

1. धर्म सहित ज्ञान ही वांछनीय है।
2. ज्ञान ही सर्वोपरि नहीं है उसे धर्म मार्ग पर चलाना है।
3. निरंतर शोध को हयग्रीव प्रेरणा देता है, ज्ञान को बांटने से उसका वृद्धि होता है।
4. विद्या का लक्ष्य सत्यान्वेषण है।
5. ज्ञान का शत्रु है अहंकार, निजी सम्पदा ज्ञान ही है।
6. धन, अधिकार, यश, नाश होनेवाले है लेकिन ज्ञान जीवन भर रहता है।

मोक्ष मार्ग

हयग्रीव को विध्येश्वरा और वागीश्वरा भी कहते है। देव ज्ञान मोक्ष का मार्ग है। हयग्रीव उपनिषद् में हमें यह मन्त्र मिलता है।

'ॐम, श्रीम, ओम, नमो भगवते हयग्रीवाय।

विष्णवेमह्यं, मेधम, प्रज्ञम प्रयच्छ स्वाहा।।'

यह मंत्रोच्चारण से विद्या, वृद्धि, सम्पदा और मोक्ष प्राप्त होता है। भक्त जन जन्म राहित्य से मुक्ति पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकते है।

श्रावण-पूर्णिमा का रक्षा-बन्धन

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

भूमिका

भारतीय संप्रदाय में कई पीढ़ियों से (सावन) श्रावणमास की पूर्णिमा का विशेष महत्व है। इस विशिष्ट अवसर पर वैकुंठवासी श्री महाविष्णु का स्मरण किया जाता है। इस त्योहार के मनाने के पीछे यह श्रद्धा और भावना निहित होती है कि श्री महाविष्णु की शक्ति ही हम सब की रक्षा करती है।

'भविष्योत्तर पुराण' में 'महाभारत' की कही हुई एक कथा में हमें 'रक्षा-बन्धन' की प्रस्तावना मिलती है। राजा युधिष्ठिर के प्रश्न करने पर श्रीकृष्ण भगवान ने रक्षा-बन्धन के महत्व को बताया था। इस कथन की परिपुष्टि में श्रीकृष्ण ने बताया था कि एक बार रक्षा के बन्धन से पूरें साल-भर दुष्ट ग्रह, प्रेत, पिशाच आदियों की बाधा न होगी। इन सब पीड़ाओं से उपशमन मिलता है और इनसान को अनारोग्य, अशुभ आदि पीडाओं तथा बाधाओं को दूर भगाता है।

इस संदर्भ में पुरातन काल में घटित एक संघटना को श्रीकृष्ण भगवान ने राजा युधिष्ठिर को सुनाया।

शचीदेवी की रक्षा

पुरातन काल में राक्षस देव - विरोधी होते थे। राक्षस वेदों को न मान कर, उनकी अवहेलना करते थे। दैव-दूषण तो उनके नित्यप्रति का काम था। अतएव, देवताओं तथा राक्षसों के बीच हर हमेशा युद्ध चलते थे।

28-08-26 को रक्षा-बन्धन के संदर्भ में...

ऐसे देव-दानव युद्धों में बलवान राक्षसी योद्धा देवताओं की जमकर खूब पिटाई करते थे। राक्षसों के आगे देवतालोग टिक नहीं पाते थे।

एक बार ऐसे ही देव-राक्षस की मुठ-भेड़ सिद्ध हो गयी थी। देवेन्द्र की पत्नी 'शचीदेवी' को डर था कहीं युद्ध में उसके पति को कोई हानि पहुँचे। इसलिए शचीदेवी ने देवताओं के सर्वोपरि अधिनायक विष्णुभगवान का खूब स्मरण कर अपने पतिदेव देवेन्द्र की महा शक्तिमान कलाई पर एक सशकत 'रक्षा' बाँधी थी।

आश्चर्य, इस बार के घनघोर देव-राक्षस युद्ध में राक्षसों का भारी विध्वन्स रच गया, जिस युद्ध में देवराज इन्द्र ने स्तुतिपात्र समरोत्साह दिखा कर दानव सेना को परास्त कर दिया। इस कदर, पुराण-काल में स्वर्गलक्ष्मी शचीदेवी की बाँधी हुई रक्षा तहलका मचा कर 'रक्षा-बन्धन' की एक युग-युगीन परंपरा कायम कर गयी थी। रक्षा-बन्धन की इतनी महान शक्ति थी।

रक्षा-बन्धन का मंत्र

सुरराजा इन्द्र की कलाई पर रक्षा बाँधती हुई निष्ठावान् देवरानी शचीदेवी ने एक मंत्र का उच्छाटन् किया, जिसके अंतर्गत अर्थ से रक्षा पाये हुए व्यक्ति-विशेष में अपार शक्ति-बल का उत्पादन हो जाता है।

रक्षा-बन्धन का मंत्र इस प्रकार है -

येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभि बध्नामि रक्ष मा चल मा चल।।

इस श्लोकराज में श्री महाविष्णु की पराक्रम शक्ति कूट-कूट भरी है। इस प्रकार देवेन्द्र-शचीदेवी के वृत्तान्त रक्षा-बन्धन की प्राचीनता का उद्घाटन मिलता है।

अर्वाचीन रक्षा-बन्धन

इस तरह राखी बान्धने की प्रथा पुराणकाल में से चली आ रही है।

अर्वाचीन काल में - पंडितों तथा इतिहासकारों का उल्लेख है कि राखी बान्धना अपनी स्त्रियों की रक्षा के लिए 'राजपूतों' की हुई एक प्रथा है, जो आज के समाज में घुस पड़ी है।

चित्तौड़ की रानी का रक्षा-बन्धन

राजपुताना के 'चित्तौड़ दुर्ग' की महारानी 'कर्णावती' थी। चित्तौड़ दुर्ग पर गुजरात के नवाब 'बहदूरखान' की नज़र पड़ी थी। बहदूरखान दुष्ट ने चित्तौड़ को घेरने का प्रयास करने लगा था, तो राणी कर्णावती ने बहदूरखान के ईंट का जवाब पत्थर से देना का निश्चय किया।

रानी ने उस समय के मुग़लाई सम्राट् 'हुमायून' के सम्मुख एक रक्षा भेज कर प्रार्थना की कि अपने किले पर अकारण बहदूरखान के दावे से हमारी हिफाज़ित करें।

रानी की भेजी हुई रक्षा देख कर हुमायून जहाँपना बेचैन हो उठा उसने रानी कर्णावती को अपनी बहन मानते हुए, चित्तौड़-दुर्ग पर हमले के प्रयास में व्यस्त बहदूरखान को एक संदेश भेजा कि भाई, चित्तौड़ के घेरे से तुरंत वापस हट जाये, वरना उस पर मुग़लाई फौज का सामना करना पड़ेगा।

सम्राट हुमायून की इस चेतावनी से सतर्क होकर उन्मत्त बहदूरशाह का नशा उतर गया और वह चित्तौड़ गढ़ के घेरे को छोड कर वापस अपना देश चला गया।

देखा कि राखी या रक्षा-बन्धन की कितनी ताकत होती है!! कहा जाता है कि उस जमाने से यह रक्षा-बन्धन अपूर्व गति से भारतीय समाज में मान्यता पाता हुआ चला आ रहा है। तभी से भाई-बहनों के आत्मीय बन्धन के निशान के रूप में 'रक्षा-बंन्धन' त्योहार क़ायम होकर खड़ा है।

नार्ली पूर्णिमा

महाराष्ट्र और कर्णाटक राज्यों में श्रावणपूर्णिमा को 'नार्ली पूर्णिमा' कह कर मनाने की प्रथा है।

उस दिन इन राज्यों के लोग सुबह उठकर समुंदर के किनारे पर पहुँच जाते हैं। शाम तक वहीं रह जाते हैं। शाम पड़ते ही जब चन्द्रमा समुंदर से उग आता है, उस सुन्दर दृश्य को दरसते हुए लोग आनंद पारवश्य का अनुभव करते हैं। उस आनंदमय संध्या पर पर्व मनाते हैं। वहीं



रेत की देवी-देवताओं की सुन्दर मूर्तियाँ बना कर, भक्ति पारवश्य में नारियल (नार्ली) फोड़ते हैं।

इसी कारणवश इन दो राज्यों में यह 'नारिकेल पूर्णिमा(या)नार्ली पूर्णिमा' नाम से विख्यात है।

नालि पूर्णिमा

अब रही आन्ध्रा के लोगों की बात।

आन्ध्रा के महाकवि 'पाल्कुरिकि सोमनाथ' ने सावन की पूरनमा सी की अपनी रचनाओं में काफी विशेष स्थान दिया है। इसने अपने ग्रन्थ 'बसवपुराण' तथा 'पंडिताराध्यचरित्र' आदियों में अपने जमाने के तेलुगु-प्रजा के सावन के पूनम पर मनाने की उत्सव-रीतियों का बखूब वर्णित किया है। सोमनाथ ने इस त्योहार को 'नूलि-पुन्नमी' कह कर संबोधित किया है।

तेलुगुभाषा में 'नूल' का अर्थ है - कपास का धागा।

श्रावणपूर्णिमा के दिन शैव, वैष्णवधर्मी आचार के ब्राह्मणलोग नये 'यज्ञोपवीत' (जनेऊ) का धारण करते हैं। इस आचरण के कारण सावन की पूरनमासी को तेलुगु लोग 'जनेऊ पूनम' नाम से पुकारते हुए मनाते हैं।

'यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तदा।
युष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।'

राखी का माहात्म्य

रक्षा नाम राखी में बदल गया है। सर्व प्रथम स्वर्गलक्ष्मी इन्द्राणी ने शत्रु-विजय के लिए अपने पति इन्द्र को रक्षा बान्धी थी।

अनंतर काल में अपने देश की रक्षा के लिए राजपुत्र-कन्या रानी कर्णावती ने उन दिनों के बलवान राजा मुग़लाई हुमायून चक्रवर्ती को 'रक्षा' भेज कर, इतिहास के पलों पर एक बड़ा संकेत बनकर खड़ी है।

आज - श्रावणपूर्णिमा (सावन की पूरनमासी) खास कर भाई-बहनों का एक बलवान घटनापूर्वक पर्व बन कर भरतवर्ष के कोने-कोने में मनायी जा रही है।

बहनें इस दिन शुभ्रस्नाताएँ बन कर अपने भाई को घर बुला कर, उसकी कलाई पर राखी बांध कर, अपनी सुरक्षा का वचन लेती है।

समापन

श्रावणपूर्णिमा एक सुरक्षापूर्वक अनुबन्ध का तेजोमय त्योहार है। इस पर्व पर हर भाई अपनी बहिन की रक्षा का वचन देता है। श्रावणपूर्णिमा आनंदोल्लास का पर्व है। वह सही परिवार व्यवस्था की सुरक्षा का त्योहार है, जो पारिवारिक मंगल के दायित्व की सूचिका है। यह सर्वदा अनुमोदक पर्व है।

अस्तु!!

जून-2026 महीने का क्विज-47 के समाधान

1) वसुदान, 2) तोंडमान, 3) श्रीकृष्ण,

4) दशरथ, 5) श्रीराम, 6) रावणासुर,

7) गंगा, यमुना, सरस्वती,

8) यमुनोत्री, 9) सूर्य भगवान,

10) स्वाति नक्षत्र (ज्येष्ठ मास),

11) श्री वेणुगोपाल स्वामी,

12) चोल, यादव, विजयनगर और कार्वेटिनगर,

13) तोंडमान,

14) श्री वेंकटेश्वर स्वामी/बालाजी,

15) अगस्थ्य ऋषि आश्रम,

29-08-26 को गायत्री जाप के संदर्भ में...

गायत्री मंत्र का वैभव

-श्रीमती प्रेमा वर्धन



भूमिका :

भारतीय सनातन परंपरा में यदि किसी वेदमाता का स्थान प्राप्त है, तो वह गायत्री मंत्र है। यह मंत्र ऋग्वेद में महर्षि विश्वामित्र द्वारा दृष्ट है। हम रामायण पढ़ते हैं, वाल्मीकि महर्षि का गायत्री रामायणम (भीजाक्षर) बहुत श्रेष्ठ है। इसमें पूरा रामायण आ जाता है। रोज इसको पढने से, हमारा पाप मिट जाता है। गायत्री मंत्र केवल एक प्रार्थना नहीं, बल्कि मानव बुद्धि, चेतना और आध्यात्मिक उत्कर्ष का महामंत्र माना गया है।

मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थात् - हम उस परम दिव्य सविता देव के श्रेष्ठ तेज का ध्यान करते हैं; वह परम प्रकाश हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

गायत्री माता की महिमा

वैदिक एवं पौराणिक परंपरा में गायत्री को केवल एक मंत्र नहीं बल्कि दिव्य शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। उन्हें 'वेदमाता' ज्ञानस्वरूपिणी तथा ब्रह्मशक्ति कहा गया है।

वेदमाता की प्रभाव

महल में रानी की सेवा करने केलिए बहुत-सी स्त्रियाँ उपस्थित हैं। उनमें से कुछ स्त्रियाँ रानी के बिखरे हुए केशों को ठीक करके, उन्हें एकत्र कर संवारकर सुंदर रूप से सजाती थीं। वेदज्ञ लोग वेद की कल्पना एक पवित्र स्त्री के रूप में करते हैं। वेद को वेदमाता के नाम से ही पुकारा जाता है। इस वेद को भगवान तिरुमल (विष्णु) की पट्टमहिषि कहा जा सकता है। वेद का महत्वपूर्ण भाग उपनिषद् है। इसे 'वेद शिरस' नाम से ही जाना जाता है। यहाँ (आचार्यवर्य) देशिकर उपनिषद् का वर्णन वेदरूपी स्त्रि के सिरपर स्थित केशों के रूप में करते हैं।

इस संबंध में एक ऐतिहासिक परंपरा कही जाती है। रामानुज के अंतिम समय में उनके शिष्य लोग गुरु से बिछुडने के विचार से अत्यंत दुखी हो गये। तब रामानुज ने उन्हें अपनी बुद्धिमान शिष्य कोंगु पिराट्टी के घर जाने के लिए कहा। वे भी वैसे ही वहाँ चले गये। अम्मैयार ने बडे आनंद के साथ उनका स्वागत किया और उनका सत्कार किया। उन्होंने उनके आने का कारण पूछा। उन्होंने भी बताया कि रामानुज ने भेजा

है। अम्मैयार ने अपनी सूक्ष्म बुद्धि से उनके आने का कारण जान लिया।

फिर उन्होंने घर के भीतर जाकर एक लाल रेशमी डोरी और एक सफेद रेशमी डोरी लाकर रखी। वह उनके सामने बैठ गयी। अपने लंबे केशों को लेकर उन्हें अलग-अलग किया। फिर सुगंधित तेल लगाकर अपने केशों को अच्छी तरह संवारा। केशों में जो भी उल्झनें थीं, उन्हें दूर कर दिया। फिर उसने अपने केशों को बाँधकर अपने साथ लाई हुई लाल रेशमी डोरी से गाँठ बांधी। उसके बाद कुछ समय तक आराम से बैठी रही। फिर दुबारा सफेद रेशमी डोरी से केशों में गाँठ बाँधी। उसके बाद बिना कुछ बोले आए हुए लोगों को प्रणाम करके उन्हें विदा कर दिया।

आए हुए लोगों को कुछ भी समझ में नहीं आया। अम्मैयार तो भीतर चली गयी थीं। इसलिए वे लोग वापस रामानुज के पास जाकर सारी घटनाएँ बताईं। तब रामानुज ने भी मुस्कुराते हुए उन्हें उसका अर्थ समझाया।

हमारी शिष्य कोंगु पिराट्टि कोई साधारण मानव स्त्री नहीं है। स्वयं वेदमाता ही इस स्त्री का रूप धारण करके आई हैं। हमने अन्य मनों का खंडन कर लोगों को वेदों का वास्तविक अर्थ समझाया, इससे वेद देवता प्रसन्न हुई। हमारे प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए हमारी शिष्य बनकर आई हैं।

यह वेद देवी हैं, इसलिए उनके केश 'वेद शिरस्' कहे जाने वाले उपनिषदों का प्रतीक हैं। इन्होंने पहले अपने केशों को खोकर बिखेरा। इसका अर्थ यह है कि अन्य मतों के लोगों ने वेदों का गलत अर्थ बताकर उपनिषदों के वास्तविक अर्थ को विकृत और भ्रमित कर दिया था - इस बात का संकेत उन्होंने अपने केशों को बिखरने की क्रिया से दिया।

फिर उन्होंने अपने केशों में सुगंधित तेल लगाकर उन्हें एकत्र किया और सुव्यवस्थित किया। यह इस बात का संकेत है कि हमने लोगों को वेदों का वास्तविक अर्थ समझाया। इसके बाद उन्होंने अपने केशों को लाल रेशमी डोरी से बाँधा। इसका अर्थ है कि हम काषाय वस्त्र धारण करने वाले संन्यासी के रूप में अनेक ग्रंथों की रचना कर वेदों के सही अर्थ को प्रकट करके वेदों की रक्षा कर चुके हैं। फिर उन्होंने अपने केशों को सफेद रेशमी डोरी से बाँधा। इसका क्या अर्थ है? कई वर्षों बाद हम पुनः काँची के निकट तूप्पुल् में वेदांत देशिक रूप में अवतार लेनेवाले हैं। इस समय हम गृहस्थ जीवन में रहेंगे, संन्यास ग्रहण नहीं करेंगे। क्योंकि भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए संन्यास अनिवार्य नहीं है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी यदि भगवान के प्रति भक्ति रखी जाए, तो उनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है।

गायत्री जप का शक्ति

विश्वामित्र महर्षि गायत्री मंत्र की अधिष्ठात्री देवता का प्रत्यक्ष दर्शन किये थे। त्रिशंकु ने इच्छा की कि वह इसी शरीर के साथ स्वर्गलोक जाए। इसलिए वशिष्ठ से प्रार्थना किया। यह गलत है करके वशिष्ठ ने मना कर दिये। फिर विश्वामित्र के पास गया। पहले वह भी मना किये। त्रिशंकु ने कहा- ''मैं आपके पास इस विश्वास से आया हूँ कि आप मुझे अवश्य भेज देंगे।'' महर्षि को उसका ऊपर दया आया। उन्होंने त्रिशंकु को वचन दे दिये- ''मैं तुम्हें भेजूँगा।'' ऐसा कहकर उन्होंने अपनी तपस्या की शक्ति का प्रयोग किये। त्रिशंकु ऊपर उठता हुआ इंद्रलोक तक पहुँच गया और इंद्र के सामने जाकर खड़ा हुआ। इंद्र ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। त्रिशंकु नीचे गिरने लगा - सिर नीचे और पैर ऊपर। जब वह इस प्रकार घूमता हुवा गिर रहा था, तब विश्वामित्र महर्षि ने फौरन उसके लिए एक अलग इंद्रलोक की रचना कर दी। यह कैसे संभव हुआ? यह गायत्री की शक्ति थी। गायत्री की महिमा का वर्णन करने केलिए स्वयं गायत्री शब्द ही पर्याप्त है।

अनुष्ठान

'उपकोसल' नाम का एक विद्यार्थी 'सत्यकाम' नामक आचार्य के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि वे उसे ब्रह्म विद्या का उपदेश दें। आचार्य ने कहा - ''बेटा, मैं अभी तीर्थ यात्रा पर जाने वाला हूँ। मैं नित्य अग्निहोत्र करता हूँ न? तुम इस अग्नि को बुझने मत देना, इसकी रक्षा करना। मैं अपनी यात्रा पूरी करके तुम्हारे पास वापस आऊँगा।'' 'उपकोसल' भी आचार्य का आज्ञा पालन करके बहुत सावधानी से अग्नि को बुझने नहीं दिया तथा उसकी रक्षा करता रहा। दो महीने बीत गयी। यह अग्निहोत्र वन में होनेवाली साधना थी। वहाँ कोई सहायता करने वाला भी नहीं था। उसने धैर्य रखा और गायत्री मंत्र उच्चारण करके अग्निहोत्र की सेवा की। ऐसा बारह वर्ष बीत गया। आचार्य नहीं लौटे बारह वर्ष बीत होने पर भी!। तब स्वयं अग्नि भगवान प्रकट हुए और उसे वैस्वानर विद्या नामक ब्रह्मविद्या का पूर्ण उपदेश प्राप्त करने के योग्य बनाया। उपकोसल को आशीर्वाद देके अग्नि भगवान अंतर्धान हो गए। अगले दिन आचार्य लौट आए। उपकोसल का मुख से ब्रह्मतेज झलक रहा है। ये कैसे हो सकता है?... आचार्य ने उपकोसल से क्रोधित हो कर बोला। मेरे लौटने से पहले किसी और से ब्रह्मविद्या सीख ली?... तुम मेरे शिष्य बनने के योग्य नहीं हो। बाहर चले जाओ।'' उसी समय अग्नि भगवान प्रत्यक्ष प्रकट हुए। उन्होंने कहा- ''जिस शिष्य को आपने स्वीकार नहीं किया, उसे मैंने स्वीकार किया है। इतनी परीक्षा क्यों? मैंने स्वयं इसे ब्रह्मविद्या प्रदान कर दी है।''... यह सुनकर आचार्य शिष्य की महानता की प्रशंसा की और वह 'उपकोसल ब्रह्मविद्या' के नाम से प्रसिद्ध हुई। ये सब गायत्री की महिमा से प्राप्त हुई।

सूर्य भगवान

वैदिक दृष्टि से गायत्री मंत्र सूर्य के रूप में प्रकट दिव्य चेतना (सविता) का आवाहन करता है। सूर्य भगवान का रथ में, गायत्री, बृहती, उष्णिक, जगती, ट्टष्टुप, अनुष्टुप, पंक्ति ऐसा सात चन्दस, सात घोडे कहा जाता है।

मानव जीवन में इनका प्रभाव

गायत्री माता ज्ञान, विवेक, सद्बुद्धि और आध्यात्मिक जागरण की अधिष्टात्री मानी जाती है। वे मानव के अंतःकरण को प्रकाशित कर उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। मनुस्मृति (2-77) में कहा गया है, 'गायत्री से बढकर कोई पवित्र करनेवाला मंत्र नहीं हा। भगवद्गीता (10.35) में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं - ''छन्दसामहम गायत्री'' अर्थात छन्दों में मैं गायत्री हूँ। इससे गायत्री की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वयं भगवान ने उसे अपनी विभूति के रूप में वर्णित किया है।

प्रमुख प्रभाव

बुद्धि का विकास, अन्य विश्वास और साहस, सकारात्मक ऊर्जा, आध्यात्मिक जागरण। ऐसा शक्ति वाली गायत्री माता को प्रणाम करें।

श्री गायत्री माता की जय!!



सितंबर 2026

04. श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी
13. श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती
14. श्री गणेश चतुर्थी
14 से 23 तक तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
19. तिरुमल श्री बालाजी का गरुड़सेवा
23. श्री वामन जयंती
23 से 26 तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव
25. श्री अनंतपद्मनाभव्रत
27. महालय पक्ष प्रारंभ

वैखानस आगम परिचायक श्री विखनस मुनि

28-08-26 को विखनस मुनि जयंती के संदर्भ में...



वैखानस वैष्णव धर्म के अंतर्गत दक्षिण भारत के एक अल्पसंख्यक समूह के सदस्य है। वैष्णव धर्म हिंदू धर्म का एक रूप है जो भगवान विष्णु के प्रति भक्ति से परिपूर्ण है। वैखानस मूल रूप से तपस्वियों का एक प्रारंभिक संप्रदाय थे, जिन्होंने वनवास त्यागने के बाद मंदिरों का प्रबंधन संभाला। इस परंपरा का नाम इसके संस्थापक ऋषि वैखानस द्वारा प्रतिपादित दर्शन से लिया गया है। इसके अनुयायी मुख्य रूप से ब्राह्मण है जो कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा और वैखानस कल्पसूत्र के संप्रदाय से संबंधित है। संभवतः आठवी शताब्दी ई. के शिलालेखों में वैखानसों को मंदिर के पुरोहितों के रूप में पहचाना गया है, आज दक्षिण भारतीय राज्यों तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में स्थित आधे से अधिक वैष्णव मंदिरों में वैखानस मुख्य पूजारी है।

वैखानस परंपरा के अनुसार विखनस मुनि की उत्पत्ति श्रीमान नारायण के मन से हुई थी जब भूलोक में कई ऋषि उनकी आराधना करने से हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें सही आराधना करने का तरीका पता नहीं था। उन्हें कोई जानकारी नही थी। श्रीमान नारायण ने विशेष खानन (खुदाई) के माध्यम से एक नए ऋषि की उत्पत्ति की उनका नाम विखनस रखा और उन्हें वेदों, वेदांतों के उपदेशों और गायत्री मंत्रों की दीक्षा के द्वारा उनके विभव और अर्चवतों में आराधना करने की शक्ति प्रदान की।

ऋषि विखनस नैमिषारण्य पहुँचे, जहाँ भगवान अपने नौ शिष्यों अत्रि, भृगु, मरीचि, कश्यप, वशिष्ट, पुलहा, पुलस्त्य, क्रथु और अंगिरस के साथ स्वायंभुव मन्वन्तर शुक्लपक्ष श्रावणपूर्णिमा, सोमवार, सिंहलग्न के समय श्रवणम के तारे के साथ वहाँ पहुँचे।

उनमें से चार शिष्यों अत्रि, भृगु, मरीचि और कश्यप ने विखनस महर्षि की शिक्षाओं के आधार पर श्री वैखानस भगवत्शास्त्रम का प्रमुख भाग लिखा है।

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

वैखानस लोग पाँचमूर्तियों श्रीविष्णु, पुरुष अच्युत तथा अनिरुद्ध की अर्चा करते है। पाँचरात्र मत में चार मूर्तियाँ स्वीकृत है - वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न एवं अनिरुद्ध। वैष्णव आगमिक परम्परा के अनुसार आगम तीन प्रकार के है - (1) निगम, (2) तान्त्रिक तथा (3) मिश्र वैखानसागम निगम तथा भागवत मिश्र है। वैखानस आगम को वैदिक तथा पाँचरात्र को तांत्रिक होना कहा है। महर्षि मरीचि के शब्दों में वैखानस की महत्ता अधोलिखित है -

वैखानसं महाशास्त्रं सर्ववेदेषूद्धृतं सर्ववेदार्थसारभूतं अप्रतर्क्थमनिन्दितं वैदिकैरुपसेवितुं विष्णोराराधनं सर्वभूतहितार्थाय शब्दं प्रमाणमवलम्ब्य विष्णुना विखनसा उक्तम्। विखनसा भृग्वादीनामुक्तम्।।'

वैखानस वैष्णव के सारे संस्कार तथा धार्मिक कृत्य एवं गृह विधान वैखानस-सूत्रों और शास्त्रों के आधार पर विदित होते है। अखिल जगत्कारणभूतेन विखनसा प्रणीतत्वात् अर्थात् यह धर्मग्रन्थ सम्पूर्ण जगत् के स्रष्टा विखनस के अनुसार प्रणीत है।

'अकिलजगदेक कारण भूत श्रीनारायणैकपरत्वात्' ये वैखानस जगत के मुख्य कारण श्रीनारायण की पूजा के प्रति समर्पित है। तत्सूत्रोक्त धर्मानुष्ठान-वतामेव भगवत्प्रियतमत्वोपपत्तेश्च''। नारायण ने स्वयं कहा है कि वैखानस मेरे अत्यन्त प्रिय है।

पाँचरात्रागम के प्राचीन ग्रन्थ जयाख्य संहिता में वैखानस का लक्षण निरूपित करते हुए बताया गया है कि परिग्रहवान विप्र जो परमेश्वर पूजन में रत रहता है, उसे वैखानस वैष्णव कहा जाता है यह द्विजों, क्षत्रियों अथवा वैश्यों से याचित या अयाचित धन प्राप्तकर कुटुम्ब का भरण-पोषण करता है। आश्रमोपनिषद् का उद्घोष है कि वैखानस वानप्रस्थ का पर्यायवाची है।

परम्परा के अनुसार विखनस ने 'दैविकसूत्रम्' की रचना की थी जिसे भृगु, मरीचि, अत्रि और कश्यप ने संक्षिप्त करके 'भगवत्शास्त्रम' नामक चतुर्लक्ष - ग्रन्थात्मक रचना का निर्माण किया। वराह पुराण के अनुसार भगवान कहते है कि अश्वत्थ वृक्ष, लाल गाये, तुलसी का पौधा और ऋषि विखनस वे चार चीजें हैं उन्हें प्रिय है। और इन चारों में ऋषि विखनस सबसे प्रिय है।

वेदान्ततत्वमीमासाखननं कृतवान् हरिः
नाम्ना विखानसं चक्रे तत्परययोगतः।

ऐसा कहा जाता है कि वेद के अर्थ की खोज या वैदिक कोष के महत्व की गहन जाँच पहले ऋषि द्वारा की गई थी जिन्हें इसलिए विखनस कहा जाता था।

ऋषि अत्रि के ग्रन्थों को तंत्र कहा जाता है। और इनमें कुल 88,000 ग्रंथ है, जो पूर्वतंत्र, आत्रेयतंत्र, विष्णुतंत्र, उत्तरतंत्र, खिलतंत्र और परतंत्र में विभाजित है। ऋषि भृगु के कार्यों को अधिकार कहा जाता है। जिसमें 64,000 ग्रंथ शामिल है और दो वासाधिकार, चित्राधिकार, मानाधिकार, क्रियाधिकार, अर्चनाधिकार, यज्ञाधिकार, वर्णाधिकार है। ज्ञानकांड में विभाजित प्रकीर्णाधिकार, प्रतिगृह्याधिकार, निरुक्ताधिकार और खिलाधिकार। ऋषि काश्यप के कार्यों को कांड कहा जाता है और इसके अंतर्गत 64,000 ग्रंथ मौजूद है, जिन्हें सत्यकांड, तर्ककांड और ज्ञानकांड में विभाजित किया गया है।

ऋषि मरीचि के कार्यों को संहिता कहा जाता है और वे 1,84,000 ग्रंथ है। वे जयसंहिता, आनंदसंहिता, संयोजनसंहिता, वीरसंहिता, विजयसंहिता, विजितसंहिता, विमलसंहिता और है।

वैष्णवधर्म की वैखानस शाखा ऐकेश्वरवादी है। इसका मुख्य उद्देश्य विष्णु के दृश्य रूप में उनकी पूर्णभक्ति

करना है जिसमें घरों और मंदिरों में उनकी पूजा के अनुष्ठानिक पहलुओं पर विशेष बल दिया जाता है। वैखानस साहित्य विस्तृत है। अधिकांश ग्रंथ पूजा के अनुष्ठानों का सूक्ष्मतम विवरण देते हैं। जिनमें दैनिक, पाक्षिक, मासिक और वार्षिक उत्सव शामिल है। विशेषरूप से प्रायश्चित अनुष्ठानों, मंदिर वास्तुकला, प्रतिमा विज्ञान, प्रतिमा स्थापना अभिषेक आदि पर जोर दिया गया है।

वैखानस प्राचीन पाँचरात्र संहिता का नाम है, जिसका उल्लेख पद्मसंहिता में मिलता है, यह पाँचरात्र सिद्धांत और अभ्यास (अर्थात् विषयवस्तु का चार ग्रना निरूपण- ज्ञान, योग, क्रिया, चर्या) से संबंधित सभी विषयों को समाहित करनेवाली सबसे व्यापक रूप से प्रचलित संहिता है जिसमें लगभग 9000 श्लोक है। पाँचरात्र और वैखानस दोनों ही आगमों में नारायण को परमदेवता स्वीकारा गया। वैखानस अर्चा को वैदिक पूजन तथा पाँचरात्र को शुद्ध पूजन कहते हैं। वैखानस ग्रन्थ के अनुसार इनकी परिभाषा अधोलिखित है -

विहङ्गरूपो भगवान् यां वाचमसृजद्विभुः।

तां वाचमखनद् ब्रह्मा तस्माद्विखनसो मुनिः।।

नान्मा विखनसं प्राहुः यं च वैखानसं तथा। अर्थात् विहंगरूपी भगवान, जिस वाणी का सर्वत्र विस्तार करते है, उस वाणी का ब्रह्म के द्वारा खनन किया गया, उसकी लोक में विखनस मुनि (ब्रह्म) के द्वारा स्थापना की गयी उसे ही वैखानस कहा जाता है।

वैखानसागम-वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय अधोलिखित है-

(1) विमानार्चनकल्प : मुनि मरीचि द्वारा प्रोक्त यह ग्रन्थ गद्य रूप में प्राप्त है। इस ग्रन्थ का सम्पादन श्री सेतुमाधवाचार्य देवनागरि लिपि में किया।

(2) आनन्द संहिता : यह संहिता भी मुनि मरीचि द्वारा ही प्रणीत है।

(3) समूर्तार्चनाधिकरण : इस ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि अत्रि है।

(4) कश्यपज्ञानकाण्डम् : ऋषि कश्यप द्वारा प्रोक्त यह ग्रन्थ गद्यात्मक रूप में प्राप्त है।

वैखानस आगम ग्रंथ

जैसा कि ऊपर बताया गया है वैखानस ग्रंथ चार प्रकार के है (i) अधिकार, (ii) संहिताएँ, (iii) तंत्र, (iv) काण्ड।

अधिकार (13) :

(1) खिलतंत्र, (2) पुरातंत्र, (3) वासाधिकार, (4) चित्राधिकार, (5) मानाधिकार, (6) क्रियाधिकार, (7) अर्चाधिकार, (8) यज्ञाधिकार, (9) वर्णाधिकार, (10) प्रकीर्णाधिकार, (11) प्रगृह्याधिकार, (12) निरुक्ताधिकार, (13) खिलाधिकार।

संहिताएँ (8) :

(1) जया संहिता, (2) आनंद संहिता, (3) संज्ञान संहिता, (4) वीर संहिता, (5) विजय संहिता, (6) विजिता संहिता, (7) विमला संहिता, (8) ज्ञान संहिता।

तंत्र (4) :

(1) पूर्वतंत्र, (2) आत्रेयतंत्र, (3) विष्णुतंत्र, (4) उत्तरतंत्र।

काण्ड (3) :

(1) सत्य काण्ड, (2) तर्ककाण्ड, (3) ज्ञानकाण्ड।

वैखानस आगम की विषय-वस्तु :

(1) मंदिरों का निर्माण, (2) गर्भगृह के प्रकार, (3) मंदिरों का संस्कार, (4) मूर्ति स्थापना, (5) दैनिक पूजा, (6) दैनिक पूजा की सामग्री, (7) पूजा में प्रयुक्त वैदिकमंत्र, (8) नैमित्तिक कर्म, (9) प्रायश्चित्त विध, (10) उत्सव।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के मंदिर में भगवान श्री वेंकटेश्वर की पूजा वैखानस आगम पद्धति से की जाती है। जिसे मुनि वैखानस ने स्थापित किया था। यह एक अत्यधिक विस्तृत और कड़े नियमों वाली दैनिक और साप्ताहिक पूजा प्रणाली है।

वैखानस पूजा पद्धति का मुख्य क्रम :

तिरुमल में दैनिक पूजा का क्रम इस प्रकार है -

(1) सुप्रभातम् : भोर में मंदिर के कपाट खोले जाते है और भगवान को जगाने केलिए वैदिक मंत्रोच्चार और स्तुति की जाती है।

(2) तोमाला सेवा : भगवान को फूलों की माला और तुलसी अर्पित की जाती है।

(3) अर्चना और सहस्रनाम : भगवान के 1000 नामों का जापकर अर्चना की जाती है।

(4) नैवेद्यम और आरती : भगवान को विशेष पारंपरिक भोग अर्पित किया जाता है और दिन के विभिन्न प्रहारों में आरती होती है।

(5) एकांत सेवा : रात में शयन के पूर्व भगवान को चांदी के पालने में सुलाने की रस्म की जाती है।

वैखानस सिद्धांत के अनुसार आध्यात्मिक मुक्ति विष्णु के धाम वैकुंठ में प्रवेश है। भक्त के मोक्ष का स्वरूप जप, यज्ञ, अर्चना, ध्यान के अभ्यास पर निर्भर माना जाता है।

वैखानस आगम को ऋषियों द्वारा प्रतिपादित एक अत्यन्त पवित्र 'दिव्यशास्त्र' माना गया है।

''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय!''

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में यह पवित्र पुण्य तीर्थ उपस्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में 1 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी.म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी.म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि



मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

कैयिल् कनियेन्न क्कण्णनै क्काट्टित्तरिलुम्, उन्तन्
मेय्यिल् पिरंगिय शीरन्नि वेण्डिलन् यान्, निरय
त्तोय्यिल् किडक्किलुम् शोदिविण् शेरिलुम् इव्वरुळ्नी
शेय्यिल् धरिप्पन्, इरामानुज एन् शेयुम् कोण्डले ॥१०४॥

मेघनिभौदार्यशालिन् भगवन् रामानुज! तत्रभवता भगवति लक्ष्मीनाथे करतलामलकवत् सर्वथा विधेये कृते सत्यपि सत्यं भवदीयदिव्यमंगल-विग्रहसौन्दर्यादन्यत्र न मे कामना प्रचलिष्यति। अथ संसारनरकगर्ते वा श्रीमति वैकुण्ठे दिव्ये धाम्नि वा मम कामं भवतु वासः; न तत्र मे चिन्ता; भवदीयसौन्दर्या-नुभवानुगुणां कृपामधिगत्यैवाहमात्मानं धारयेयं नान्यथा।

(औदार्य के विषय में) विलक्षण मेघ के समान विराजमान हे श्री रामानुज स्वामिन्! यदि आप मुझे साक्षात् भगवान के ही हस्तामलक की भांति अतिविशद दर्शन करा दें, तो भी मैं (उनकी परवाह न करता हुआ) आपके दिव्यमंगलविग्रह के (सौंदर्यादि) शुभगुणों के सिवा दूसरी किसी वस्तू पर अपनी नजर नहीं डालूँगा; मैं बेशक संसार रूपी इस नरक में ही पडा रहूँगा; अथवा ज्योतिर्मय परंधाम पहुँचूँगा, इसकी चिंता नहीं।

परंतु आप यही कृपा करें (कि मैं उक्त प्रकार आपके श्रीविग्रह के ही दर्शन करता रहूँ); यह कृपा पाकर ही मैं (संसार में हो अथवा मोक्ष में हो) शांति पा सकूंगा। (मुझ पर आप ऐसी कृपा कीजिए, जिससे मैं अपने सामने खडे हुए भगवान की भी परवाह न करता हुआ, आपके ही दर्शन करने में मग्नमानस हो जाऊँ। यदि यह कृपा मिल जाय, तो इस संसार में रहने पर भी मुझे दुःख न लगेगा; और यदि यह कृपा न मिले तो परमपद जाने पर भी मुझे शांति नहीं मिलेगी।)

क्रमशः

श्रीवरमहालक्ष्मी व्रत पूजा का विधि-विधान

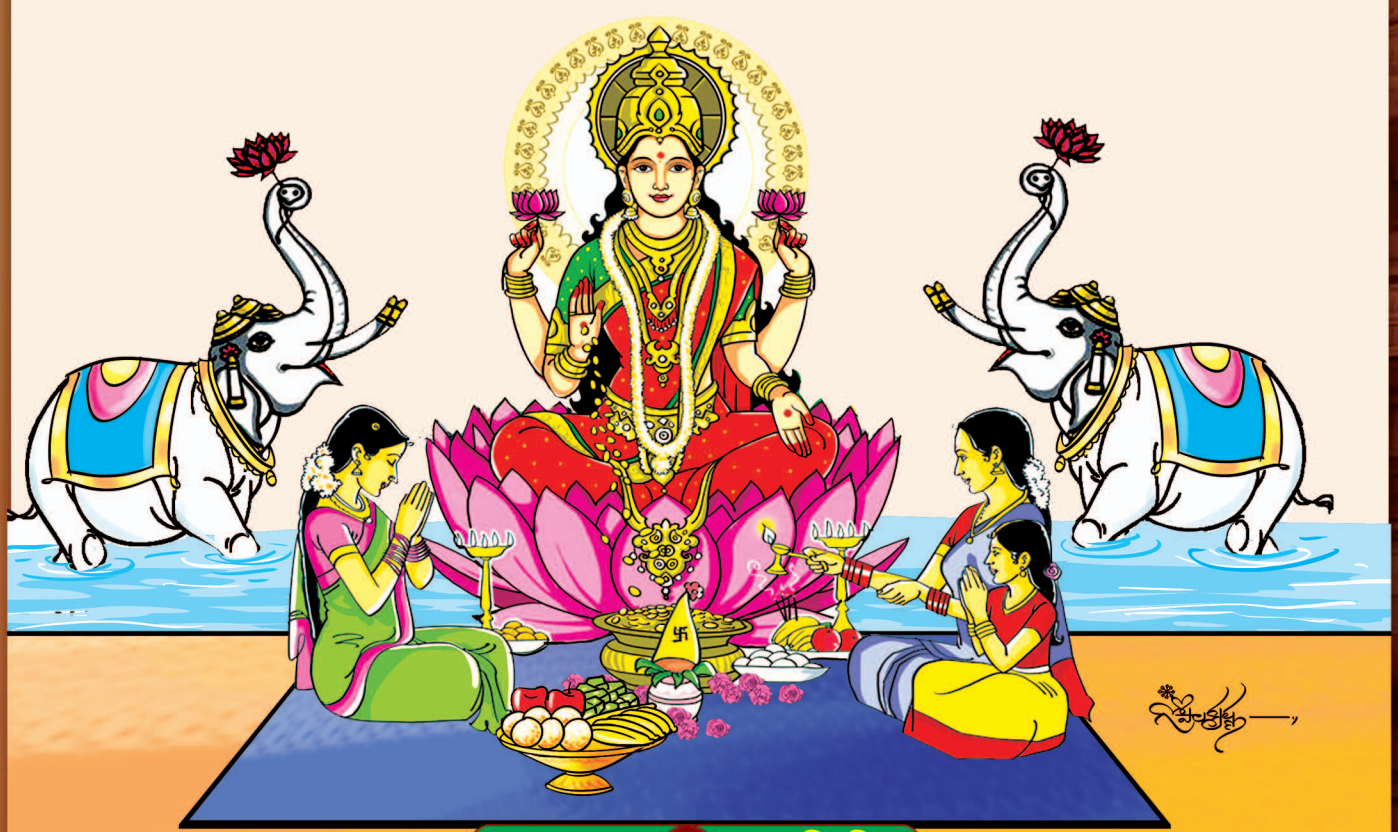
टिप्पणी

श्रीवरलक्ष्मी व्रत को श्रावणमास के पूर्णिमा तिथि से पहले आनेवाले शुक्रवार को (उस दिन की तिथि कुछ भी हो) करना होता है। अगर सूचित शुक्रवार को किसी कारणवश पूजा करना संभव नहीं हुआ, तब श्रावणमास के किसी भी शुक्रवार के दिन को व्रत रखा जा सकता है। मानिए, श्रावण मास में पूजा करना नहीं हो पाया, तब दशहरे में आनेवाले शुक्रवार को भी की जा सकती है।

सूचना

दीपाराधना, संकल्प, कलशपूजा, गणपति पूजा इत्यादि का आचरण उसी प्रकार किया जाना चाहिए, जिस प्रकार गणेशचतुर्थी के समय किया जाता है। लेकिन संकल्प निम्नांकित रूप से लेना चाहिए-

''मम उपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम्, शुभे शोभने मुहूर्ते (संवत्सर के अनुरूप तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि का विवरण देकर...) अस्माकं सहकुटुंबानाम् क्षेमस्थैर्य विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्य अभिवृध्यर्थम्, धर्मार्थ काममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ फल सिध्यर्थम्, सत्संतान सौभाग्य शुभफल प्राप्त्यर्थम् वर्षे वर्षे प्रयुक्तां, एतद्वर्षे श्रीवरलक्ष्मी देवतां उद्दिश्य, श्रीवरलक्ष्मी देवता प्रीत्यर्थम्,





लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरंगधामेश्वरीं
दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपांकुराम्।
श्रीमन्मन्दकटाक्ष लब्ध विभवत् ब्रह्मेंद्र गंगाधराम्
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुंदप्रियाम्।।

भाव : हे लक्ष्मीदेवी! आप क्षीरसागर की राजकुमारी है। श्रीरंगधाम का अधिपति हो, दास दासी जनों को, समस्त देवता स्त्रियों को, समस्त लोकों को प्रकाश करने वाले दीपज्योति आप ही हो। ब्रह्म, इन्द्र, शिव आदि सभ आपकी दिव्य अनुग्रह की नज़रों से ही उन्हें शान-शौकत मिली है। समस्त लोक आपका परिवार है। पद्म में पैदा होनेवाली, विष्णु के प्रिय सखी बने हे लक्ष्मीदेवी! आपको मेरा सादर प्रणाम है।

भविष्योत्तर पुराण कल्पोक्त प्रकारेण यावच्छक्ति ध्यान आवहनादि षोडश उपचारपूजां करिष्ये'' (कहकर, श्रीवरलक्ष्मी के चित्रपठ पर, कलश पर फूल, अक्षत चढ़ाकर नमन करना होता है।) (इसके उपरांत कलशपूजा तथा गणपति पूजा करना होता है।)

श्रीवरलक्ष्मीदेवी ध्यानं

ॐ पद्मासने पद्मकरे सर्वलोकैकपूजिते।
नारायणप्रिये देवी! सुप्रीता भव सर्वदा।।
ॐ क्षीरोदार्णवसंभूते! कमले कमलालये।
सुस्थिरा भव मे गेहे सुरासुरनमस्कृते।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतां ध्यायामि (नमस्कार सहित फूल, अक्षत-कलश तथा मैया के चित्रपठ पर समर्पित करना है।)

आवाहनम्

ॐ देवी! त्रैलोक्यजननी! सर्वलोकैकपावनी।
आगच्छ वरदे! मातः प्रसीद परमात्मिके।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतां आवाहयामी। (ऐसा कहकर चित्रपठ तथा कलश पर फूल, अक्षत चढ़ाना है।)

आसनम्

ॐ स्वर्णरत्नमयं दिव्यं होमवर्णम् सुशोभितम्।
आसनं ते प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व हरिप्रिये।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः रत्नसिंहासनम् समर्पयामि। (पुनः फूल तथा अक्षत का समर्पण करना है।)

पाद्यम्

ॐ गंगादिसलिलैर्युक्तं सुगंधेन सुवासितम्।
पाद्यं गृहाण श्रीदेवी! सर्वदेवनमस्कृते।।

ओम् श्रीवरलक्ष्मी देवतायैनमः पादयोः पाद्यं समर्पयामी। (कहकर, कलश के पानी के दो बार उद्धरणी (पूजा में प्रयुक्त चम्मच) से कलश के निचलेभाग से स्पर्श कराकर (यह मानते हुए कि वहाँ मैया के चरण हों), उस जल को अर्घ्यपात्र में डालना होगा।)

अर्घ्यम्

ॐ शुद्धोदकं च पात्रस्थम् गंधपुष्पादिमिश्रितम्।
अर्घ्यं दास्यामि ते देवी। गृहाण सुरपूजिते।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (श्लोकोच्चारण के उपरांत, दो बार उद्धरणी से कलश के पानी को मैया के हाथों से स्पर्श कराके, उस पानी को अर्घ्यपात्र में डालना है।)

आचमनीयम्

ॐ सुवर्णकलशानीतम्, चंदनागरुसंयुतम्।
गृहाणाचमनं देवी! मया दत्तं शुभप्रदे।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि। (कलश के पानी को तीन बार उद्धरणी से मैया के मुँह से स्पर्श कराकर अर्घ्यपात्र में डालना चाहिए।)

पंचामृतस्नानम्
(दूध, दही, घी, शहद तथा शक्कर का मिश्रण)

ॐ पयोदधिघृतोपेतम् शर्करामधुसंयुतम्।
पंचामृतस्नान मिदं, गृहाण कमलालये।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः पंचामृतस्नानम् समर्पयामि। (पंचामृत को पांच बार मैया के चित्रपठ तथा कलश पर फूल के द्वारा छिड़कना होता है।)

शुद्धोदक स्नानम्

ॐ गंगाजलं मयानीतं महादेवशिरःस्थितम्।
सुगंधिद्रव्यसंयुक्तं जलं स्नानाय गृह्यताम्।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः सुगंधिद्रव्य संयुक्त शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। (कलशोदक को उद्धरणी में लेकर, उस जल को फूल के द्वारा कलश तथा चित्रपठ पर छिड़कना होगा।) ''स्नानानंतरम् आचमनीयम् समर्पयामि'' (कहकर कलश के पानी को उद्धरणी में लेकर, मैया के मुँह को प्रस्तुत कर, अर्घ्यपात्र में डालना होगा।)

वस्त्रम्

ॐ सुरार्चितांघ्रियुगले दुकूलवसनप्रिये।
वस्त्रयुग्मं प्रदास्यामि गृहाण हरिवल्लभे।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। (रुई से बने दो वस्त्रों से मैया के चित्रपठ तथा कलश को सजाना होगा।)

आभरण

ॐ केयूरकंकणे दिव्ये हारनूपुरमेखलाः।
विभूषणानि आमूल्यानि गृहाण ऋषिपूजिते।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः आभरणानि समर्पयामि। (हम पहले से ही मैया को आभूषणों से अलंकरण किये ही होते हैं ना... इसीलिए अब फूल तथा अक्षत कलश तथा चित्रपठ पर समर्पित कर नमन कर सकते हैं।)

यज्ञोपवीतम् (जनेऊ)

ॐ तप्तहेमकृतं देवि! मुक्तादामसमन्वितम्।
उपवीतम् मया दत्तं गृहाण त्वं शुभप्रदे।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः यज्ञोपवीतम समर्पयामि। (मैया को जनेऊ समर्पित करें।)

गंधम्

ॐ कर्पूरागरुकस्तूरीरोचनादिभिरन्वितम्।
गंधम् दास्या म्यहं देवि! प्रीत्यर्थम् प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः दिव्य परिमल गंधान् धारयामी। (चंदन को फूल से लगाकर चित्रपठ तथा कलश पर लगाना होगा।)

हरिद्राचूर्णम् (हल्दी), कुंकुम, अक्षत

ॐ अक्षतान् धवलान् देवि! शालीयाम् स्तंडुलान् शुभान्।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृह्यताम् अब्धिपुत्रिके।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः अक्षतान्, हरिद्राचूर्णम्, कुंकुमम् समर्पयामि। (अक्षत, हल्दी, तथा कुंकुम, मैया को समर्पित करना होगा।)

पुष्प समर्पणम्

ॐ मल्लिकाजातिकुसुमैः चंपकैर् वकुलैरपि।
शतपत्रैश्च कल्हारैः पूजयामि हरिप्रिये।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः नानाविध परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। (नाना प्रकार के सुगंधित फूलों को कलश तथा चित्रपठ पर समर्पित करना होगा।)

अब श्रीवरलक्ष्मी देवी की अंगपूजा समर्पित करना होता है। (मैया की पूजा चरणों से होते हुए शिर तक करनी होती है।)

श्री वरलक्ष्मीदेवी का अंगपूजा

ॐ श्री चंचलायै नमः	पादौ पूजयामि (चरणों के लिए समर्पित)
ॐ श्री चपलायै नमः	जानुनी पूजयामि (घुटनों के लिए समर्पित)
ॐ श्री पीतांबरायै नमः	ऊरू पूजयामि (जंघों के लिए समर्पित)
ॐ श्री कमलवासिन्यै नमः	कटिम् पूजयामि (कटि के लिए समर्पित)
ॐ श्री पद्मालयायै नमः	नाभिम् पूजयामि (नाभि के लिए समर्पित)
ॐ श्री मदनमात्रे नमः	स्तनौ पूजयामि (स्तनों के लिए समर्पित)
ॐ श्री ललितायै नमः	भुजद्वयं पूजयामि (भुजाओं के लिए समर्पित)
ॐ श्री कंभुकंठ्यै नमः	कंठम् पूजयामि (गले/कंठ के लिए समर्पित)
ॐ श्री सुमुखायै नमः	मुखम् पूजयामि (मुखडे के लिए समर्पित)
ॐ श्री श्रियै नमः	ओष्ठौ पूजयामि (होंठों के लिए समर्पित)
ॐ श्री सुनासिकायै नमः	नासिकाम् पूजयामि (नासिका/नाक के लिए समर्पित)
ॐ श्री सुनेत्र्यै नमः	नेत्रे पूजयामि (आँखों के लिए समर्पित)
ॐ श्री रमायै नमः	कर्णौ पूजयामि (कानों के लिए समर्पित)
ॐ श्री कमलायै नमः	शिरः पूजयामि (शिर के लिए समर्पित)
ॐ श्री वरलक्ष्मी देव्यै नमः	सर्वाणि अंगानि पूजयामि।

(अंगपूजा के उपरांत
श्रीलक्ष्मी अष्टोत्तरशतनामावली का
समर्पण कुंकुम या फूलों से
किया जाना चाहिए।)

श्रीवरलक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावली

(इन नामों को पढ़ते हुए श्री वरलक्ष्मी की पूजा पुष्पों से या अक्षत से करें। एक व्यक्ति नामों को पढ़ते रहे। अन्य व्यक्ति 'ॐ' बोलकर पूजा करें।)

ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ विकृत्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ विभूत्यै नमः
ॐ सुरभ्यै नमः
ॐ परमात्मिकायै नमः
ॐ वाचे नमः
ॐ पद्मालयायै नमः 10

ॐ पद्मायै नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ हिरण्मयै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ नित्यपुष्टायै नमः
ॐ विभावर्यै नमः 20

ॐ अदित्यै नमः
ॐ दित्यै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ वसुधारिण्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कांतायै नमः
ॐ कामाक्ष्यै नमः
ॐ क्रोधसंभवायै नमः
ॐ अनुग्रहपरायै नमः 30

ॐ बुद्धये नमः
ॐ अनघायै नमः
ॐ हरिवल्लभायै नमः
ॐ अशोकायै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
ॐ धर्मनिलयायै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ लोकमात्रे नमः 40

ॐ पद्मप्रियायै नमः
ॐ पद्महस्तायै नमः
ॐ पद्माक्ष्यै नमः
ॐ पद्मसुंदर्यै नमः
ॐ पद्मोद्भवायै नमः
ॐ पद्ममुख्यै नमः
ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ पद्ममालाधरायै नमः
ॐ देव्यै नमः 50

ॐ पद्मिन्यै नमः
ॐ पद्मगंधिन्यै नमः
ॐ पुण्यगंधायै नमः
ॐ सुप्रसन्नायै नमः
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ चंद्रवदनायै नमः
ॐ चंद्रायै नमः
ॐ चंद्रसहोदर्यै नमः
ॐ चतुर्भुजायै नमः 60

ॐ चंद्ररूपायै नमः
ॐ इंदिरायै नमः
ॐ इंदुशीतलायै नमः
ॐ आह्लादजनन्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शिवकर्यै नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ विमलायै नमः
ॐ विश्वजनन्यै नमः 70

ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
ॐ शांतायै नमः
ॐ शुक्लमाल्यांबरायै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ बिल्वनिलयायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः 80

ॐ वसुंधारायै नमः
ॐ उदारांगायै नमः
ॐ हरिण्यै नमः
ॐ हेममालिन्यै नमः
ॐ धनधान्यकर्यै नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः
ॐ शुभप्रदायै नमः
ॐ नृपवेश्मगतानंदायै नमः
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः 90

ॐ वसुप्रदायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
ॐ समुद्रतनयायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ मंगलादेव्यै नमः
ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः 100

ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः
ॐ नवदुर्गायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
ॐ त्रिकालज्ञानसंपन्नायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः 108

(ॐ श्रीवरमहालक्ष्मी देव्यै नमः
अष्टोत्तरशतनामपूजां समर्पयामि।)

धूपम्

ॐ दशांगम् गुग्गुलोपेतं सुगंधम् च मनोहरम्।
धूपम् दास्यामि देवेशि! कृपया परिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः दिव्यपरिमलधूपम् आघ्रापयामि। (उपर्युक्त श्लोक उच्चरित करते हुए, घंटी बजाते हुए मैया को धूप तीन बार समर्पित करना होगा।)

दीपम्

(तीन बत्तियों को पहले से ही घी में भिगो कर तदुपरांत दियों को प्रज्वलित करना होगा)

ॐ घृताक्तवर्तिसंयुक्तं अंधकारविनाशकम्।
दीपं दास्यामि ते देवि! गृहाण मुदिता भव।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः दीपम् दर्शयामि। (उपर्युक्त श्लोक का पठन करते हुए दीपदान में प्रज्वलित दिये को घंटी बजाते हुए, मैया के चरणों से लेकर, शिर तक तीन बार घुमाकर, समर्पित करना होगा।)

''धूपदीपानंतरम् आचमनीयम् समर्पयामि'' - (इस प्रकार कहते हुए, कलश के पानी को उद्धरणी में लेकर, मैया के मुँह पर प्रस्तुत कर, उस जल को अर्घ्यपात्र में डालना होगा।)

नैवेद्य

(नैवेद्य समर्पण में नारियल, फल, गुडान्न, इमली चावल, मिठाई होने चाहिए। नैवेद्य के लिए प्रस्तुत व्यंजनों में प्याज, लसन तथा मसालेदार अनाजों का प्रयोग मना है।)

सूचना

नैवेद्य में समर्पित व्यंजनों पर फूल या तुलसीपत्र से कलश के पानी को छिड़कना होता है।

नैवेद्यमंत्र

ॐ नैवेद्यम् षड्रसोपेतम्, दधि मधु आज्यसंयुतम्।
नानाभक्ष्यफलोपेतम् गृहाण हरिवल्लभे।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' - (नारिकेलफलखंडद्वय, नानाविधफल, भक्ष्य सहितमहानैवेद्यम् समर्पयामि) (इस प्रकार मंत्रोच्चारण कर, दाहिने हाथ में एक फूल लेकर) ''ॐ प्राणात्मने नमः, ॐ अपानात्मने नमः, ॐ व्यानात्मने नमः, ॐ उदानात्मने नमः, ॐ समानात्मने नमः'' - (मंत्रोच्चारण के साथ उद्धरणी से कलश का पानी लेकर, मैया के मुँह से पाँच बार प्रस्तुत कर, अर्घ्यपात्र में छोड़ना होगा।)

नैवेद्य के उपरांत, ''मध्ये-मध्ये पानीयम् समर्पयामि'' - (उद्धरणी से तीन बार मैया को जल दिखाकर, उसे अर्घ्यपात्र में डालना होगा), इसके बाद ''हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि'' शुद्धाचमनीयम् समर्पयामि - कहकर पाँच बार उद्धरणी से पानी अर्घ्यपात्र में छोड़ना होगा।

ताम्बूलम्

(तीन पान के पत्ते, दो सुपारी अथवा तीन सुपारी और दो पान के पत्ते तांबूल के रूप में समर्पित करना होगा। यथाशक्ति दक्षिणा (रुपये) भी समर्पित होना चाहिए। छिले हुए पान के पत्तों, फटे हुए सुपारी पोट्लियों का उपयोग मना है। तांबूल के लिए स्वस्थ पान के पत्ते तथा पुंगीफल (पूर्णसुपारी) का ही प्रयोग करना चाहिए।)

ॐ पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' सदक्षिण तांबूलम् समर्पयामि - (इस मंत्र को पढ़ते समय उद्धरणी से पानी लेकर, उसे तांबूल तथा मैया के मुँह में प्रस्तुत कर, पानी से अर्घ्यपात्र में छोड़ना होगा।

कर्पूर नीराजनम्

ॐ नीराजनम् समानीतम् कर्पूरेणसमन्वितम्।
तुभ्यं दास्यामि अहम् देवी! गृह्यतां विष्णुवल्लभे।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' कर्पूरनीराजनम् दर्शयामि। (दीपदान में कर्पूर आरती को रखकर तीन बार घुमाते हुए आरती, मैया को आपादमस्तक कर्पूर आरती समर्पित करना चाहिए। भक्तों को मैया का दर्शन इस प्रज्वलित आरती की रोशनी में करना होता है)।

''नीराजनानंतरम् आचमनीयम् समर्पयामि''। (कहकर उद्धरणी के जल को मैया को दिखाकर अर्घ्यपात्र में छोड़ना चाहिए।)

मंत्रपुष्पम्

(दाहिने हाथ में फूल तथा अक्षत को रखकर)

ॐ पद्मासने! पद्मकरे! सर्वलोकैकपूजिते।

नारायणप्रिये देवि! सुप्रीता भव सर्वदा।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' मंत्रपुष्पम् समर्पयामि। (इस मंत्र के साथ हाथ में रखे फूल तथा अक्षत को मैया के कलश के पास रखकर नमस्कार समर्पित करना होगा।)

प्रदक्षिणम

(हाथों में फूल तथा अक्षत लेकर, थोड़ा दूर जाकर, मैया को अपना पीठ बिना दिखाये, तीन बार प्रदक्षिण करना होगा, उसके बाद ठीक मैया के सामने उपस्थित होकर, कलश के पास फूल तथा अक्षत को रखकर, मैया को नमस्कार करना होता है।)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेव शरणंमम।

तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष हरिप्रिये।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' आत्मप्रदक्षिणानि समर्पयामि।

नमस्कार

(मैया को तीन बार नमस्कार प्रस्तुत करना होगा।)

ॐ नमस्त्रैलोक्यजननि! नमस्ते विष्णुवल्लभे।

त्राहिमां भक्तवरदे! वरलक्ष्मी नमोस्तुते।।

''ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः'' नमस्कारान् समर्पयामि- (इसके उपरांत, व्रत संबंधी पावन धागों (दीक्षासूत्र भी कह सकते हैं) को यानी मैया के हाथ में तथा व्रताचरण करनेवाली स्त्रियों को दाहिने हाथ में बांधने के लिए सूत्रों को बनाकर तांबूल सहित एक थाली में रख, कलश के दाहिने ओर रखकर, उन सूत्रों को हल्दी-कुंकुम तथा फूलों के साथ निम्न नामों से मंत्रपूत करना पडेगा।) (नौ धवल धागों को एक दीक्षासूत्र के रूप में बनाना होगा। नौ की संख्यक धवल धागों में हल्दी लगाकर, नौ गाँठ बांधकर कहीं बीच में फूल या पान के पत्ते को सूत्र में बांधना होगा। व्रताचारक जितनी स्त्रियाँ हैं, उतने दीक्षा सूत्र और मैया के लिए एक अतिरिक्त सूत्र बनाना होगा।)

ॐ श्रीकमलायै नमः	प्रथमग्रंथिम्	पूजयामि (पहली गाँठ पर)
ॐ श्रीरमायै नमः	द्वितीयग्रंथिम्	पूजयामि (दूसरे गाँठ पर)
ॐ श्रीलोकमात्रे नमः	तृतीयग्रंथिम्	पूजयामि (तीसरे गाँठ पर)
ॐ श्रीविश्वजनन्यै नमः	चतुर्थग्रंथिम्	पूजयामि (चौथे गाँठ पर)
ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः	पंचमग्रंथिम्	पूजयामि (पाँचवें गाँठ पर)
ॐ श्रीक्षीराब्धितनयायै नमः	षष्ठग्रंथिम्	पूजयामि (छेठे गाँठ पर)
ॐ श्रीविश्वसाक्षिण्यै नमः	सप्तमग्रंथिम्	पूजयामि (सातवें गाँठ पर)
ॐ श्रीचंद्रसहोदर्यै नमः	अष्टमग्रंथिम्	पूजयामि (आठवें गाँठ पर)
ॐ श्रीहरिवल्लभायै नमः	नवमग्रंथिम्	पूजयामि (नवें गाँठ पर)

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः नवग्रंथियुक्त थोरपूजाम् समर्पयामि...

(इसके उपरांत धागों पर हल्दी, कुंकुम, फूल समर्पित करके नमस्कार करना होगा। अब मंत्रपूत एक धागे को निम्न कथित श्लोक का पठन करते हुए पहले मैया के दाहने हाथ पर बांधकर, उस पर हल्दी, कुंकुम रखकर नमस्कार करना होगा।)

श्लोक

ॐ बध्नामि दक्षिणे हस्ते नवसूत्रम शुभप्रदम्।

पुत्र पौत्राभिवृद्धिं च सौभाग्यं देहि मे रमे।।

ॐ श्रीवरलक्ष्मी देवतायै नमः श्रीवरलक्ष्मी व्रतांग नवग्रंथिथोरम् समर्पयामि...। (मैया को मंत्रपूत धागा समर्पित करना है।)

तदुपरांत, जो स्त्रियाँ वरलक्ष्मीव्रत रख रही हैं, वे अपने दाहिने हाथ में नारियल या फल को लेकर, आपस में एक दूसरे के दाहिने हाथ में उपर्युक्त श्लोक उच्चरित करते धागा हुए बंधवाना होगा (बध्नामि... रमे... ही मंत्र है।)। बंधवाने के बाद मैया को हल्दी, कुंकुम समर्पित कर, नमस्कार करना होगा।

सूचना

मंत्रपूत धागे के बंधवाने के बाद, जिस पुरोहित ने इस व्रत को करवाया है, उन्हें, सादर ''वायनम्'' (दक्षिणा सहित तांबूल) देना पडेगा। 'वायनमु' (तेलुगु शब्द) में तांबूल, दक्षिणा, मीठे व्यंजन (संख्या में 12 होने चाहिए) एवं बारह(12) फल देने पड़ते हैं। निम्नांकित मंत्र का उच्चारण व्रत रखनेवाले दंपति करते हैं। इसे पुरोहित भी कहते हैं।

ॐ इंदिरा प्रतिगृहूणातु इंदिरा वै ददाति च।
इंदिरा तारिकोभयोः इंदिरायै नमो नमः।।

(वायनम् को व्रतरखनेवालों दंपत्ति एवं पुरोहित साथ में पकडते हैं। दंपत्ति देते हैं, उसे पुरोहित स्वीकारते है। उसके बाद, पुरोहित निम्नसूचित विधान में देनेवाले दंपति का आशीर्वाद करते हैं।)

श्रीवरलक्ष्मी कृपाकटाक्षेण अनयोः दंपत्योः दीर्घसौमंगल्य। आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धि रस्तु। सततं श्रीरस्तु। वंशाभिवृद्धिरस्तु।।'' -

कहकर जिन्होंने व्रत रखा है, उनके हाथ में फूल, अक्षत रखकर, उद्धरणी से तीन बार पानी लेकर मैया के सामनें छोड़ने के लिए कहना है।

मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् हरिप्रिये।
यत्पूजितम् मया देवि। परिपूर्णम् तदस्तु ते।।

''एतत् पूजाफलं सर्वं श्रीवरलक्ष्मी अर्पणमस्तु''

अनया कल्पोक्त प्रकारेण कृतया षोड़शोपचार
पूजया भगवती सर्वात्मिका
श्रीवरलक्ष्मीदेवता सुप्रीता, सुप्रसन्ना वरदा भवतु।
मम इष्टकाम्यार्थ सिद्धिरस्तु।।

(इस श्लोक के उच्चारण के बाद दंपति को मैया के सामने अक्षत तथा जल छोड़ना चाहिए और नमन करना चाहिए। इसके उपरांत वरलक्ष्मीव्रत कथा का पाठन करना होता है। कथारंभ से पहले, सभी के हाथों में फूल तथा अक्षत पकडवाकर यह सूचित करना होगा कि उसे कथा के आद्यंत हाथ में रखकर पूरी कथा श्रद्धापूर्वक सुनना चाहिए।)

श्रीवरलक्ष्मी व्रत कथा

ॐ सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरुपिणि।
विद्यारंभम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

ॐ गुरुर्ब्रह्म, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु स्साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

(इस श्रीवरलक्ष्मीव्रत कथा को महेश्वर ने पार्वती को सुनाया।) हे भक्तगण आप भी इसे सुनिये...

एकदा समये, कैलाश पर्वत में शिव तथा पार्वती रत्नसिंहासन पर विराजमान थे। बहुतेरे महर्षि उनके निकटस्थ बैठे हुए थे। तभी, पार्वती ने समस्त लोकों के शुभप्रदाता शिवजी की ओर मुड़कर पूछा... ''हे जगद्रक्षक! समस्त जीवों पर दयाबरसानेवाले स्वामी! कोई ऐसी रहस्मय व्रत का कटाक्ष हम पर कीजिए जो सर्वशुभप्रद होगा''। सर्वज्ञ शिव ने तब कहा- 'हे पार्वती! मैंने तुम्हारी इच्छा को पहचान लिया। जिस व्रत का आचरण करने पर समस्त संपदा एवं शीघ्रतया संतान की प्राप्ति होती है, ऐसी महिमान्वित, श्रेष्ठ 'श्रीवरलक्ष्मीव्रत' के बारे में बताता हूँ, सुनो।

''श्रावणमास में, पूर्णिमा से पहले आनेवाले शुक्रवार को इस व्रत को रखना होता है। हे पार्वती! इस व्रत का आचरण करनेवाली स्त्री पुण्यवती बनती है।'' तुरंत ही पार्वती ने पूछा- ''हे नाथ! इस व्रत का विधान क्या है? इसमें किस देवता को पूजना चाहिए? इस वरलक्ष्मी मैया की आराधना इससे पहले किसी ने किया है क्या? अगर किया हो तो वह पुण्यात्मा कौन है जिसने मैया का कृपापात्र बनी हो?''

शिवजी ने तब पार्वती का संदेहनिवृत्ति इस प्रकार किया- ''हे पार्वती! परमपवित्र इस वरलक्ष्मीव्रत की फलश्रुति

सुनो।'' 'कुंडिनमु' नामक सर्वसंपन्न एक गाँव था। इसमें 'चारुमति' नामक एक पुण्य पतिव्रता ब्राह्मण स्त्री रहा करती थी। वह पति तथा सास-ससुर की नित्यसेवा करती थी। यह सुशिक्षित स्त्री, सभी कार्यों में निष्णात थी। सुसंस्कारों से युक्त यह स्त्री सदा मुस्कान लिए दिखाई देती थी।

एक रात को श्रीलक्ष्मी देवी ने स्वप्न में साक्षात्कार देकर चारुमतिदेवी से कहा- ''हे सौभाग्यवती! मैं वरलक्ष्मीदेवी, तेरा भला चाहनेवाली हूँ। श्रावणमास के पूर्णिमा से पहले पड़नेवाले शुक्रवार को मेरी पूजा करो, मैं तुम्हें समस्त पर प्रदान करूँगी।'' बड़े हर्ष के साथ तब चारुमति ने मैया की ऐसी स्तुति की - हे माते। वरदे जगन्माता! तू पुण्यस्वरूपिणी हो, शरणार्थियों का उद्धार करती हो, त्रई लोकों में पूजित हो, विष्णुवक्षःस्थल पर विराजती हो, तेरा दृष्टि जिस पर प्रसरित होती है, वह पुण्यात्मा, सर्वसंपन्न, गुणवान बन जाता है। तेरे चरण दर्शन बहुतेरे पुण्यजन्मों का फल है मैया।'' लक्ष्मीदेवी अतिप्रसन्न होकर चारुमति पर मैया कृपावृष्टि कर दी।

चारुमति ने अगले दिन जागकर, पिछली रात के स्वप्नवृत्तांत को अपने बंधुजनों को सुनाया। उत्तर में सभी ने प्रशंसापूर्वक चारुमति से कहा- ''हे चारुमति, तेरा स्वप्न अत्यंत पवित्र बना है, हम सभी मैया के वचनों का निःशंकापूर्वक पालन करेंगे।'' इतना कहकर सभी लोग श्रावण मास के पूर्णिमा से पहलेवाले शुक्रवार के आगमन के इंतजार में रहे।

वह दिन आ ही गया। सभी स्त्रियों ने प्रातःकाल में निर्मल तथा स्वच्छ मन से मंगल स्नानाचरण कर शुभ्रधोये कपड़ों को पहना। एक कलश को हल्दी-कुंकुम से सजाकर, उसके अंदर चावल तथा बरगद के पाँच कोंपल (पत्ते) रखकर, चारुमति तथा अन्य सुवासिनियों ने उस कलश में वरलक्ष्मी की आवाहन कर, पूजादि कर, दाहिने हाथ में मंत्र पूर्व नवसूत्र को एक दूसरे से बंधवाया। घी से बने मिठाइयों, तथा अन्यव्यंजनों को नैवेद्य में चढ़ाया।

तदुपरांत श्रेष्ठ ब्राह्मण को बारह संख्यक मिठाई (भक्ष्य), फल, नारियल, दक्षिणायुक्त तांबूल दान में दिया। पूजास्थल में निवेदित पदार्थों को सभी भक्तों ने प्रसाद के रूप में स्वीकारा।

मैया के कृपाकटाक्ष के फलस्वरूप सभी स्त्रियों को मुक्ता एवं अमूल्य मणियों से जडित आभूषण पहनने का योग मिला। पैरों में पायल, अद्वितीय रत्नों के जड़ाऊ पाये। संपदा के साथ-साथ उन स्त्रियों को पुत्र तथा पौत्र भी प्राप्त हुए। इस प्रकार सभी भक्ति दानधर्म करके बड़े हर्ष तथा संतोषजनक जीवन बिताये।

शिवजी ने आगे कहा- ''हे पार्वती! चारुमति के स्वप्नवृत्तांत को गाँव के समस्त लोगों ने जाना तथा इस पावन व्रत को बड़ी निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ आचरण किया। हम सभी भी उस चारुमति के कारण इस कथा को सुनकर धन्य हुए।''

''चारुमति क्या ही पुण्यजीवी तथा सौभाग्यशाली है, स्वयं लक्ष्मीदेवी ने साक्षात्कार देकर व्रत आचरण का उपदेश दिया।'' शिवजी ने अपने बात आगे बढ़ाई - ''हे पार्वती! 'श्रीवरलक्ष्मी व्रत' अत्यंत पवित्र तथा प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ व्रत है। मैंने इसका पूरा विवरण तुम्हें दिया। इस व्रत का जो आचरण करते हैं, इसकी व्रतकथा जो भी बताता है या श्रवण करता है, वह वरलक्ष्मी के कृपाकटाक्ष से समस्त कार्यसिद्धि प्राप्त करता है।''

उपर्युक्त पावनवचन भविष्योत्तर पुराण के पार्वती-परमेश्वर के संवाद से लिया गया है।

श्रीवरलक्ष्मीव्रतम् संपूर्णम्

सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु। समस्तसन्मंगलानि भवंतु।।

(कथा के दौरान हाथ में लिये अक्षत तथा फूलों को मैया के कलशचरण में रखकर नमस्कार करना होगा। इसके उपरांत तीर्थ एवं प्रसाद स्वीकारना होगा।)

तीर्थमंत्र

अकालमृत्युहरणम् सर्वव्याधिनिवारणम्।
समस्तपापशमनम् लक्ष्मीपादोदकम् शुभम्।।

।। शुभमस्तु ।।

अनुवादक : डॉ.एम.आर.राजेश्वरी

'ओणम' एक फसल उत्सव



ओणम त्योहार के संदर्भ में...

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

भारत विविध संस्कृतियों का देश है और हर प्रांत में साल भर अनेक त्योहारों को आडंबरतापूर्वक मनाया जाता है। भगवान का अपना देश, केरल में ओणम एक प्रमुख त्योहार है। ओणम केरल का अधिकारिक राज्य त्योहार है। इस त्योहार को केरल के लोग जहाँ भी हो, बड़े ही धूमधाम से मनाते है। मलयालम सौरमान पंचांग के अनुसार इसको चिंगम महीने में मनाया जाता है, जो मलयालम पंचांग का पहला महीना है। यह ज्यादातर अगस्त-सितंबर महीने के बीच आता है। इस समय केरल में जहाँ भी देखो, वहाँ हरियाली छाई हुई मिलती है। फसल पकने की खुशी में लोग ओणम को त्योहार के रूप में मनाते हैं। जिस प्रकार कर्नाटका और तेलुगु प्रांतों में संक्रांति, तमिलनाडु में पोंगल और असम में बिहू त्योहार है, उसी प्रकार ओणम भी फसलों का त्योहार है।

ओणम शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'श्रावणम्' से हुई है। ओणम को 'थिरु-ओणम' या 'थिरुवोनम' (पवित्र ओणम दिवस) कहा जाता है। इस त्योहार का दूसरा नाम 'श्रावणमहोत्सव' है। इस त्योहार के बारे में प्राचीन काल के 'मदुरैकांची', नामक संगम काव्य में किया गया है। इसमें मदुरै मंदिर में लोग इस त्योहार को मनाने की रीति का वर्णन किया गया है।

आगे हम दस दिनों तक मनाये जानेवाले इस त्योहार के बारे में जानने का प्रयास करेंगे।

महाबलि की कथा :

ओणम को एक पारंपरिक त्योहार के रूप में मनाने के बारे में विविध मान्यताएँ है। एक मान्यता के अनुसार केरल प्रदेश में बलि चक्रवर्ती नामक एक पराक्रमी उदारी दानव राजा था। वे साहसी नायक, न्याय प्रिय राजा तथा दानी थे। राजा बलि के शासनकाल में, प्रजा सुखी और संपन्न थी। उन्होंने अपने पराक्रम से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त किया। इंद्र पद प्राप्त करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया। इससे इंद्रादि देवता भयभीत होकर महाविष्णु से अपनी रक्षा करने की प्रार्थना की। भगवान विष्णु उनको अभय देते हुए अदिति के गर्भ से वामन अवतार लिए, और वे बौने थे। कार्य सिद्धि के

लिए वे महाराजा बलि के पास गए। महाराजा ने ब्राह्मण वामन का सत्कार किया। इस यज्ञ के अंत में वामन ने महादानी बलि से तीन पग जमीन मांगी। शुक्राचार्य के मना करने पर भी राजा बलि ने वामन को वचन दे दिया। इसके बाद वामन का रूप विशाल रूप में बढ़ गया और उन्होंने एक पग से भूमि को दूसरे पग से आकाश को नाप लिया। तीसरे चरण के लिए जगह नही रहा। तब राजा बलि को मालुम हुआ कि वह कोई साधारण ब्राह्मण बालक नहीं, बल्कि स्वयं भगवान विष्णु हैं। उसे खुशी हुई कि स्वयं भगवान विष्णु दान मांग रहे हैं। महाबलि ने अपने सिर पर वामन के पैर को रखने के लिए सिर झुकाया। वामन ने बलि के सिर पर पग रखकर उसे पाताल लोक भेज दिया। राजा बलि की लोकप्रियता, दानशीलता, न्याय पालन से संतुष्ट होकर भगवान विष्णु ने उन्हें यह वर दिया कि वे वर्ष में एक बार प्रजा से मिलने धरती पर आ सकते हैं। राजा बलि के पाताल लोक से धरती तक की इस यात्रा को केरल के लोग ओणम के रूप में पर्व मनाते हैं। इस विशेष दिन पर भगवान वामन और राजा बलि की भक्ति के साथ स्वागत किया जाता है। राजा महाबलि, जो मावेली कहा जाता है, ओणम त्योहार की आत्मा हैं।

परशुराम की कथा :

एक और पौराणिक कथा के अनुसार जब परशुरामजी ने सारी पृथ्वी को क्षत्रियों से जीतकर ब्राह्मणों को दान किया, तब उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं रही। इससे उन्होंने सह्याद्री पर्वत की गुफ़ा में वरुण देवता की तपस्या की। वरुण देवता उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर कहते हैं कि तुम अपना फरसा समुद्र में फेंकना। जहाँ तक फरसा समुद्र में जाकर गिरेगा, वहा तक समुद्र का जल सूखकर पृथ्वी बन जाएगी। वह सब पृथ्वी तुम्हारी ही होगी और उसका नाम 'परशुराम क्षेत्र'



होगा। वरुण देवता के कहने पर परशुराम जी ने अपने फरसे को समुद्र में फेंका और जल सूख कर जो भूमि उनको समुद्र में मिली, उसी को वर्तमान को 'केरला' कहते हैं। परशुराम जी ने समुद्र से भूमि प्राप्त करके वहाँ पर एक विष्णु भगवान के मन्दिर की स्थापना की। वहीं क्षेत्र है 'तिरुक्ककर अप्पण मन्दिर।' जिस दिन परशुराम जी ने मन्दिर में मूर्ति स्थापित की थी, उस दिन श्रावण शुक्ल की त्रयोदशी थी। इसलिए उस दिन 'ओणम' का त्योहार मनाया जाता है।

ओणम के दस दिन आचरण विधि :

ओणम दस दिवसीय त्योहार है। ओणम के पहले दिन को अथम कहा जाता है, उसके बाद दूसरा दिन चिथिरा, तीसारा दिन चोडी, चौथा दिन विशाकम, पाँचवा दिन अनिजम, छठा दिन थ्रीकेट्टा, सातवाँ दिन मूलम, आठवाँ दिन पूरदम, नौवाँ दिन उथ्राडोम और दसवाँ दिन थिरुवोनम कहा जाता है। दस दिन भी लोग आनंद उत्साह और भक्ति के साथ त्योहार को मनाते हैं।

अथम दिवस को कोच्चि के त्रिक्काकारा वामनमूर्ति मंदिर में उत्सवों की शुरुआत के साथ मनाया जाता है। कहा जाता हैं कि इस विष्णु मंदिर में महाबली का निवास स्थान है। यहाँ ध्वज फहराने के माध्यम से उत्सव को आरंभ किया जाता हैं।

ओणम त्योहार को आचरण करने से पहले घर को साफ करना, आवश्यक चीजों को खरीदना आदि तैयारिया शुरू हो जाती है। पहले दिन स्त्रियाँ अपने घरों के आंगन

में फूलों से छोटी सी रंगोली की सजावट करती है, जो 'पुक्कलम' कहा जाता है; दूसरे दिन पुक्कलम में और फूल जोड़ते हैं। इसके लिए नारंगी और पीले रंग के फूल चुने जाते हैं; तीसरे दिन लोग नए कपड़े, गहने और उपहार खरीदते हैं; चौथे दिन घर में महिलाएँ ओणम साद्या के लिए तैयारियाँ शुरू करती हैं; पाँचवें दिन नौका दौड़ की प्रतियोगिता का आयोजन होता है; छठे दिन लोग विविध संस्कृतिक कार्यक्रमों और सामाजिक समारोहों में भाग लेते हैं; सातवें दिन रंगोली को और बढ़ाया जाता है और सड़कों पर बाघ नृत्य का आयोजन किया जाता है। ओणम त्योहार के आठवें दिन मिट्टी से छोटी सी पिरामिड बनाते हैं। इसको फूलों की रंगोली के बीच रखा जाता है। इसको भगवान विष्णु और राजा बलि का प्रतीक माना जाता है, और इसकी पूजा की जाती है।

नौवें दिन, अपने राजा महाबलि के स्वागत के लिए सभी तैयारियाँ अंतिम चरण पहुँचती है; रंगोली का आकार बहुत बडा होता हैं। पारंपरिक का रूप से किसान अपनी फसल का एक हिस्सा महाबली के सामने रखते हैं। अंतिम दिन थिरुवोणम दस दिनों तक चलने वाले उत्सव का सबसे शुभ दिन है क्योंकि दसवे दिन राजा बलि का आगमन होता है। हर घर में पुक्कलम के मध्य में स्थापित भगवान वामन की मूर्ति की पूजा की जाती है। महिलाएँ इसके इर्द-गिर्द तालियाँ बजाती हुई नाचती हैं।



ग्यारहवाँ दिन रंगोली के बीच में रखी मूर्ति (ओनाथप्पन की मूर्ति) को नदी या समुद्र में विसर्जित करते हैं। यह दिन अविट्टम कहा जाता है। बारहवाँ दिन बड़िया उत्सव मनाते हुए अधिकारिक रूप से ओणम को समाप्त करते हैं।

ओणम की परंपराएँ और अनुष्ठान

पुक्कलम :

बलि चक्रवर्ती के स्वागत के लिए घर के प्रवेश द्वार पर फूलों से पारंपरिक रंगोली रचाई जाती है। इतना ही नहीं, लोग मानते हैं कि इस रंगोली से सुख समृद्धि की वृद्धि होती है। पुक्कलम का आकार हर गुजरते दिन के साथ बढ़ाया जाता है। भगवान वामन और महाबलि के प्रतिनिधित्व के रूप में पिरामिड के आकार की मिट्टी की मूर्ति त्रिक्काकरप्पन भी पुक्कलम के केंद्र में स्थापित किया जाता है, और पूजा की जाती है। ओणम के दिन पुक्कलम की प्रतियोगिताएँ भी होती है।

ओनम साद्या :

ओणम का त्योहार अपने व्यंजनों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। इस दौरान घरों में विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते है। ओणम के दिनों में केले के पत्ते पर परोसे जाने वाला शाकाहारी भव्य भोज को 'ओणम साद्या' कहा जाता हैं। इसमें बीस से तीस तरह के व्यंजन होते हैं। केले के पत्ते पर परोसे जाने वाले ओणम साद्या के व्यंजनों की सूची बहुत लम्बी है। सारी मौसमी सब्जियों को मिलाकर बनायी

गयी अवियल की सब्जी, सांभार, केले के चिप्स, पापड़, तोरण (पत्ता गोभी की सब्जी), अचार और पांच प्रकार के पायसम भी होते हैं। लोग परिवार और अपने प्रिय जनों के साथ मिलकर खुशी-खुशी के साथ भोजन खाते हैं, जिससे पारिवारिक तथा सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं।

ओनाक्कोडी :

ओणम के अवसर पर केरल के लोग नए पारंपरिक कपड़े पहनते हैं। पुरुष नये सफेद मुंडू में और महिलाएँ सुनहरे बॉर्डर वाली सफेद साड़ियों में सुंदर दिखते हैं। बच्चे दुगुनी खुशी के साथ नए कपड़े पहनते हैं।

वल्लमकली :

यह केरल की एक पारंपरिक नौका दौड़ है, जो मुख्य रूप से ओणम त्योहार के दौरान पुन्नमदा झील और अन्य नदियों और बैकवाटर्स में आयोजित होती है। इसमें 'चुनडन वल्लम' (सर्पाकार नाव) नामक लंबी नावें उपयोग की जाती हैं। लाखों लोग नाव स्पर्धा को देखने इकट्ठा होते हैं। यह केरल की प्राचीन और प्रसिद्ध नौका दौड़ है। केरलवासी बड़े उत्साह और उमंग से इसमें भाग लेते हैं।

पुलीकली :

पुलीकली केरल का लोक नृत्य है, जो ओणम के चौथे दिन मनाया जाता है। यह 'बाघ नृत्य' भी कहा जाता हैं। कलाकार जो बाघ की तरह अपने शरीर पर रंगों को डालके वाद्य यंत्रों (चेंडा-थकिल) की थाप पर नाचते हैं।

नृत्य और संगीत :

ओणम के दस दिनों की अवधि में पुलीकली के अलावा अनेक सांप्रदायिक नृत्यों का आयोजन किया जाता है। वे ये है - थिरुवथिरा, जो एक महिला नृत्य है; कुम्मट्टिकली, जो एक रंगीन मुखौटा नृत्य; थुम्बी युल्लल भी एक पारंपरिक नृत्य और खेल है, जो महिलाओं द्वारा किया जाता है; ओणमकाली नृत्य शैली में रामायण और अन्य महाकाव्यों से गीत गाते हुए नृत्य करते हैं।

इस ओणम के संदर्भ में केरल का विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय कथाकली नृत्य नाटक तथा मोहिनिअट्टम का भी आयोजन किया जाता है।

ओणम पौराणिक कथाओं से ओतप्रोत फसल का प्रसिद्ध त्योहार है। यह केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का त्योहार है। ओणम त्योहार नावस्पर्धा, नृत्य, संगीत, ओणम सद्या, रंगोली आदि पारंपरिक कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है।

इस त्योहार के दौरान कदम-कदम पर केरल का सांस्कृतिक महत्व झलकता है। इससे केरल सरकार ओणम को एक पर्याटक त्योहार के रूप में उत्सव मनाती है। सार्वजनिक रूप से यह केवल त्योहार ही नहीं, समाज में भाईचारे को आनंद को और अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान को बढ़ाती है।

ओनम की तिथि :

ओणम त्योहार को मलयालम पंचांग के पहला महीना 'चंगम' में दस दिन तक मनाया जाता है। ये दस दिन हस्ता नक्षत्र से शुरू होकर श्रवणा नक्षत्र तक मनाए जाते हैं। श्रावण शुक्ल की त्रयोदशी को तिरुवोनम मनाया जाता है।

ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार 2026 में ओणम 16 अगस्त (अथम) से शुरू होकर 26 अगस्त (तिरुवोनम) को अंत होता है।

श्री चक्रत्ताल्वार का अवतरित्व



12-08-26 को चक्रत्ताल्वार का वार्षिक तिरुनक्षत्र के संदर्भ में...

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया

श्रीवैष्णव परंपरा में सुदर्शन चक्र को ही 'चक्रत्ताल्वार' कहा जाता है, जो भगवान विष्णु के रक्षात्मक और पाप-निवारक आयुध हैं। चक्रत्ताल्वार का वार्षिक तिरुनक्षत्र (जन्म दिवस) तमिल कैलेंडर के चित्राई महीने के चित्ता नक्षत्र या वैखासी नक्षत्र के दिन मनाया जाता है।

चक्रत्ताल्वार (भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का साक्षात् स्वरूप) के वार्षिक तिरुनक्षत्र (जिसे सुदर्शन जयंती या अवतरण दिवस भी कहते हैं) का हिन्दू धर्म में बहुत बड़ा महत्व है। यह पर्व हर साल आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को चित्ता नक्षत्र में मनाया जाता है।

तिरुपति, श्रीरंग क्षेत्र, श्री कांची, मेलकोट जैसे प्रमुख दिव्य देशों में चक्रत्ताल्वार के वार्षिक उत्सव को अत्यंत श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

चक्रत्ताल्वार की उत्पत्ति की पौराणिक कथा

भगवान विष्णु द्वारा असुरों के संहार और भक्तों की रक्षा से जुड़ी है।

अहंकार का नाश : एक बार ऋषि दुर्वासा को राजा अंबरीश (जो भगवान विष्णु के परम भक्त थे) पर क्रोध

आ गया और उन्होंने राजा को श्राप देना चाहा। तब भगवान विष्णु ने अपने परम अजेय आयुध, सुदर्शन चक्र को राजा अंबरीश की रक्षा के लिए भेजा।

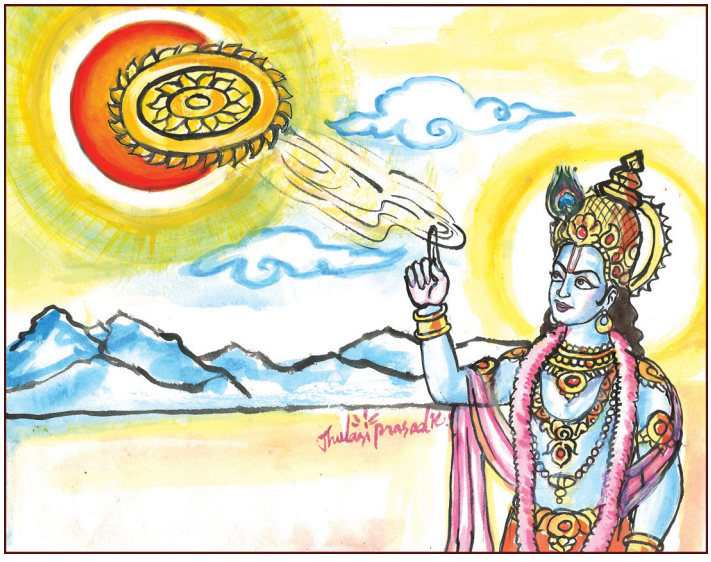
ऋषि की हार : सुदर्शन चक्र के प्रचण्ड तेज से भयभीत होकर दुर्वासा ऋषि तीनों लोकों में भागते फिरे, लेकिन कहीं भी उनकी रक्षा नहीं हुई। अंततः चक्र के प्रभाव से बचने के लिए ऋषि ने राजा अंबरीश और सुदर्शन चक्र से क्षमा मांगी। इससे यह सिद्ध हुआ कि सुदर्शन चक्र बुराई का नाश करने और शरणागत की रक्षा करने वाला सर्वोच्च अस्त्र है।

चक्रत्ताल्वार वार्षिक उत्सव का माहात्म्य :

सुदर्शन चक्र की महिमा :

चक्रत्ताल्वार (चक्रेश) को भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का ही मानवीकृत रूप माना जाता है। यह उत्सव भगवान के अजेय अस्त्र की स्तुति और उनकी शक्ति का प्रतीक है।

अजेय सुरक्षा : चक्रत्ताल्वार को भगवान विष्णु का सबसे शक्तिशाली और विनाशकारी अस्त्र माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन सुदर्शन चक्र की पूजा करना, भगवान विष्णु के सभी दस अवतारों की पूजा करने के समान फलदायी है।



पापों का नाश :

माना जाता है कि इस वार्षिक उत्सव के दौरान चक्रत्ताल्वार को समर्पित विशेष अनुष्ठानों (जैसे) सुदर्शन होम/हवन) में भाग लेने से भक्तों के सभी ज्ञात-अज्ञात पाप नष्ट हो जाते हैं।

दुष्ट शक्तियों और रोगों का निवारण :

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सुदर्शन चक्र नकारात्मक ऊर्जाओं, बुरी नजर, और असाध्य रोगों को दूर करने में अत्यंत शक्तिशाली है। यह उत्सव घर-परिवार में सुख-शांति और आरोग्य लाता है।

मोक्ष की प्राप्ति :

चक्रत्ताल्वार के चरणों का जलाभिषेक (तीर्थ) ग्रहण करने से भक्तों को आध्यात्मिक शुद्धि और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अजेय सुरक्षा :

चक्रत्ताल्वार को भगवान विष्णु का सबसे शक्तिशाली और विनाशकारी अस्त्र माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन सुदर्शन चक्र की पूजा करना, भगवान विष्णु के सभी दस अवतारों की पूजा करने के समान फलदायी है।

कष्ट और नकारात्मकता का नाश :

यह दिन शत्रुओं, बुरी नजर, काले जादू और सभी प्रकार के मानसिक व शारीरिक कष्टों से मुक्ति पाने के लिए अत्यंत पवित्र माना जाता है।

रक्षा कवच :

यह भक्तों को सभी भयानक विपत्तियों से बचाता है और उन्हें सही मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करता है।

तिरुनक्षत्र में चक्रत्ताल्वार की पूजा पूरी श्रद्धा और सात्विक भाव से की जाती है।

चक्रत्ताल्वार की पूजा के मुख्य चरण :

तैयारी और संकल्प : प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें (स्नान के जल में गंगाजल और तुलसी के पत्ते मिला सकते हैं) स्वच्छ पीले रंग के वस्त्र धारण करें पूजा स्थल को गंगाजल छिड़क कर पवित्र करना चाहिए।

चक्रत्ताल्वार की स्थापना : एक चौकी पर पीला कपड़ा बिछाएँ वहाँ भगवान विष्णु या चक्रत्ताल्वार की मूर्ति/यंत्र स्थापित करें।

षोडशोपचार पूजा : चक्रत्ताल्वार को जल, दूध, दही, शहद और घी से अभिषेक (स्नान) कराएँ, इसके बाद उन्हें गंध (चंदन), अक्षत, फूल और माला अर्पित करें।

तिरुमंजनम (पवित्र स्नान) :

इस उत्सव के मुख्य दिन चक्रत्ताल्वार की मूर्ति को मंदिर के निकट स्थित जल कुंड या नदी में ले जाकर पवित्र स्नान (तिरुमंजनम) कराया जाता है। यह रस्म भक्तों को जल के माध्यम से शुद्ध करने और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरने के लिए की जाती है।

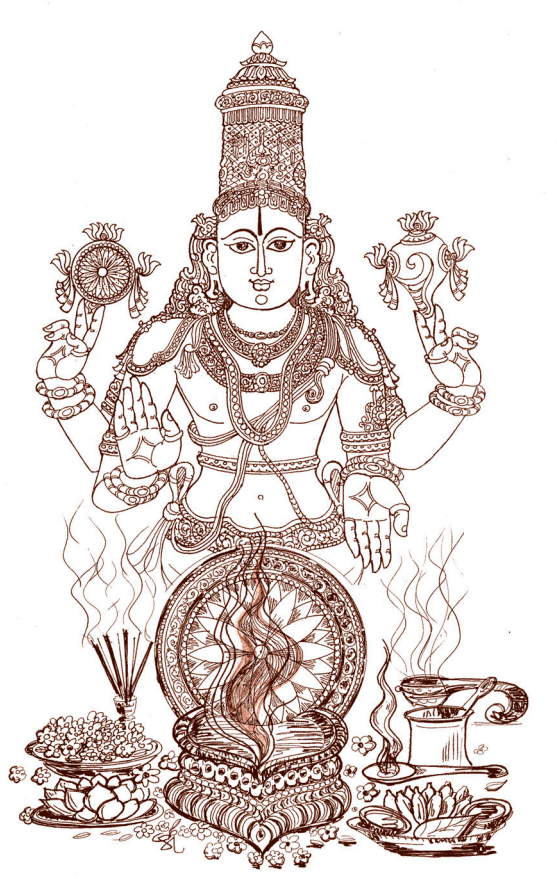
नैवेद्य :

भगवान को सात्विक भोग जैसे - तिल के लड्डू, पंचामृत और फलों का नैवेद्य लगाएँ। भोग में तुलसी का पत्ता अवश्य रखें।

मंत्र जाप : चक्रत्ताल्वार की कृपा पाने के लिए उनके गायत्री मंत्र का जाप करना सर्वोत्तम माना जाता है।

'ॐ सुदर्शनाय विद्महे, महाज्वालाय धीमहि।
तन्नो चक्रः प्रचोदयात्।।'

आरती और समापन : घी का दीपक और धूप जलाकर चक्रत्ताल्वार की आरती करें अंत में क्षमा प्रार्थना करें और उपस्थित भक्तों में



प्रसाद वितरित करें इस दिन किए गए अनुष्ठान और दान पुण्य से घर में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है।

इस दिन सुदर्शन चक्र और भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करने से कष्टों और पापों का नाश होता है। यह त्योहार वैष्णव परंपरा में बहुत महत्वपूर्ण है और इस दिन विशेष रूप से 'सुदर्शन होम' (हवन) भी किए जाते हैं।

सुदर्शन होम हवन :

चक्रत्ताल्वार के वार्षिक नक्षत्र (जन्म नक्षत्र) या विशेष तिथि पर किए जाने वाले 'सुदर्शन होम हवन' से नकारात्मक ऊर्जा दूर होता है, शत्रुओं से रक्षा होती है और आरोग्य की प्राप्ति होती है।



इसकी विस्तृत विधि :

महत्वपूर्ण तिथियाँ : नक्षत्रसुदर्शन हवन के लिए व्यक्ति का जन्म नक्षत्र सबसे उत्तम माना जाता है। इसके अलावा एकादशी, पूर्णिमा, शनिवार और बुधवार इसके लिए बेहद शुभ दिन माने जाते हैं।

हवन हेतु आवश्यक सामग्री : सुंदर यन्त्र, चक्रत्ताल्वार की तस्वीर या मूर्ति। घी, हवन सामग्री, सूखे मेवे, तिल और शहद।

अन्य सामग्री : तांबे का कलश, आम के पत्ते, नारियल, तुलसी के पत्ते, फूल और फल।

होम हवन की चरणबद्ध विधिशुद्धि और संकल्पः स्नान के बाद पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैंठे। कलश (कलश स्थापना) में वरुण और नारायण का आह्वान करें। यजमान अपना गोत्र, नाम और संकल्प (पूजा का उद्देश्य) स्टष्ट करें।

गणेश पूजन : किसी भी बाधा को दूर करने के लिए सबसे पहले गणेश पूजा की जाती है।

अग्नि स्थापना : हवन कुंड में कपूर और सूखी लकड़ियों की मदद से अग्नि प्रज्वलित करें (अग्नि की शुद्धि के लिए समिधाएँ डालें)।

मंत्रोच्चार और आहुति : मुख्य रूप से भगवान विष्णु और चक्रत्ताल्वार का आह्वान करें। आहुति देते समय निम्न सुदर्शन महामंत्र का 108 बार जाप करें :

'ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय दीप्त्रे, ज्वालापरीतया सर्वदिग्शोभन कराय ब्रह्मणे, परज्योतिषे, हुम् फट् स्वाहा।'

इसके बाद सुदर्शन गायत्री का जाप करे।

'सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नो चक्रः प्रचोदयात्।।'

पूर्णाहुति और आरती : हवन के अंत में सभी देवताओं का ध्यान करते हुए पूर्णाहुति (नारियल, पूर्ण सामग्री और वस्त्र) अर्पित करें। इसके बाद अग्नि की परिक्रमा करके सुदर्शन अष्टकम (श्री सुदर्शनाष्टकम) का पाठ करें।

श्री सुदर्शन अष्टकम की रचना श्री वेदांत देशिका ने की थी। श्री सुदर्शन अष्टकम भगवान विष्णु के प्रमुख शस्त्र भगवान सुदर्शन को समर्पित एक अत्यंत शक्तिशाली प्रार्थना है। ऐसा माना जाता है कि जो लोग भक्तिपूर्वक सुदर्शन अष्टकम का पाठ करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं और भगवान सुदर्शन की वरदान देने की शक्ति के कारण वे जीवन की सभी बाधाओं को दूर कर सकते हैं।

श्री सुदर्शन अष्टकम :

प्रतिभटश्रेणिभीषण वरगुणस्तोमभूषण
जनिभयस्थानतारण जगदवस्थानकारण।
निखिलदुष्कर्मकर्शन निगमसद्धर्मदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ।।1।।

शुभजगद्रूपमण्डन सुरजनत्रासखण्डन
शतमखब्रह्मवन्दित शतपथब्रह्मनन्दित।
प्रथितविद्वत्सपक्षित भजदहिर्बुध्न्यलक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥2॥

स्फुटतटिज्ज्वालपिञ्जर पृथुतरज्वालपञ्जर
परिगतप्रघ्नविग्रह पटुतरप्रज्ञदुर्ग्रह। (परिमित)
प्रहरणग्राममण्डित परिजनत्राणपण्डित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥3॥

निजपदप्रीतसद्गण निरुपधिस्फीतषड्गुण
निगमनिर्व्यूढवैभव निजपरव्यूहवैभव।
हरिहयद्वेषिदारण हरपुरप्लोषकारण
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥4॥

दनुजविस्तारकर्तन जनितमिस्राविकर्तन
दनुजविद्यानिकर्तन भजदविद्यानिवर्तन।
अमरदृष्टस्वविक्रम समरजुष्टभ्रमिक्रम
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥5॥

प्रतिमुखालीढबन्धुर पृथुमहाहेतिदन्तुर
विकटमायाबहिष्कृत विविधमालापरिष्कृत।
स्थिरमहायन्त्रतन्त्रित दृढदयातन्त्रयन्त्रित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥6॥

महितसम्पत्सदक्षर विहितसम्पत्षडक्षर
षडरचक्रप्रतिष्ठित सकलतत्त्वप्रतिष्ठित।
विविधसङ्कल्पकल्पक विबुधसङ्कल्पकल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥7॥

भुवननेतस्त्रयीमय सवनतेजस्त्रयीमय
निरवधिस्वादुचिन्मय निखिलशक्ते जगन्मय।
अमितविश्वक्रियामय शमितविष्वग्भयामय
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥8॥

फलश्रुति :

द्विचतुष्कमिदं प्रभूतसारं
पठतां वेङ्कटनायकप्रणीतम्।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन्
न विहन्येत रथाङ्गधुर्यगुप्तः॥

॥इति श्री वेदान्ताचार्यस्य कृतिषु श्री सुदर्शनाष्टकम् समाप्तम्॥

पाठ करने की संक्षिप्त विधि :

समय व दिशा :

सुबह स्नान के बाद पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। स्वच्छ आसन पर भगवान विष्णु या सुदर्शन यंत्र की स्थापना करें।

गाय के घी का दीपक जलाएँ। हाथ में जल लेकर अपनी कामना (रक्षा/शत्रु बाधा) का संकल्प लें।

आइए चक्रत्ताल्वार तिरुनक्षत्र के अवसर पर चक्रदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु प्रार्थना करें।

स्फुरत सहस्त्रार शिखाति तिव्रं।
सुदर्शनं भाष्कर कोटि तुल्यं॥
सुरद्विषां प्राणविनाशि विष्णोश।
चक्रं सदाहं शरणं प्रपध्ये॥



अगस्त महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र



मेष राशि - शारीरिक स्थिति मध्यम रहेगा, धनागम में अड़चन, पारिवारिक समस्या होगी परन्तु धैर्य बना रहेगा। बन्धु व मित्रजनों से मध्यम सुख एवं मनमुटाव, योजना सफल, संतान सुख। अपनों का असहयोग, गृहस्थजीवन में कलह एवं परेशानी, मातृकष्ट एवं चिन्ता, धर्म-कर्मों में अभिरुचि, मान सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि। रोजी-रोजगार क्षेत्रों में बाधा, अनर्थक धन व्यय से मन खिन्न रहेगा।



वृषभ राशि - शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव, गृहस्थजीवन सुखमय रहेगा, धनागम परन्तु लाभ से अधिक व्यय होगा जिससे मानसिक कष्ट। पूर्व किए हुए योजना सफल, भाग्य उन्नति, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, पितृ कष्ट। अपनों का सहयोग, संतान सुख मध्यम, मातृसुख, मित्र-बन्धुओं का प्रेम एवं सहयोग। कभी कभी मानसिक व्यथा। भूमि, भवन लाभ, नौकरी पेशों में पदोन्नति।



मिथुन राशि - उत्तम कार्य, सेहत ठीक-ठाक रहेगा, अपने चित्त को स्थिर रखे वरना क्रोध बढ़ेगा, आकस्मिक धन-सम्पत्तिलाभ, दाम्पत्यजीवन सुखमय रहेगा, परिवार में स्नेह उल्लास का वातावरण बना रहेगा। जिससे मन प्रसन्न, संतानसुख में कमी, योजनाओं में रूकावट। अपनों का सहयोग, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा प्राप्ति, भाग्य प्रबल है।



कर्कटक राशि - स्वस्थ शरीर, आमदनी से अधिक धन खर्च, बन्धुसुख मध्यम, अपनों का असहयोग, संतान कष्ट, योजना असफल, रोगभय। दाम्पत्यसुख, अपने वाणी पर नियन्त्रण रखें वरना अपमान होगा, इष्टमित्रों से अनबन बना रहेगा। भाग्ययोग प्रबल है परन्तु मध्य मध्य में कार्यक्षेत्रों में बाधा होगी जिससे मन खिन्न रहेगा।



सिंह राशि - उत्तम शरीर, सेहत ठीक, कार्यक्षेत्रों में प्रगति, नेत्र-उदर वेदना, धनहानि, घरेलू झंझट होने के कारण मानसिक कष्ट। मातृसुख, रोजी-रोजगार, कार्यक्षेत्रों में अड़चने, गृहस्थजीवन में कलह। वाहन सावधान होकर चलाए दुर्घटना होने कि संभावना, छात्रों के लिए अनुकूल समय परिश्रम करने की आवश्यकता, कलाक्षेत्रों में अभिरुचि। नौकरी वालों के लिए अनुकूल परिस्थिति।



कन्या राशि - उत्तम कार्य, शारीरिक सुख, सेहत बना रहेगा, चित्त प्रसन्न रहेगा। मातृसुख, संतानसुख, इष्टमित्रों का भरपुर सहयोग, पूर्व कृत योजना सफल होंगे। गृहस्थजीवन में परेशानी अतः दाम्पत्य-सुख हेतु संयम रखना होगा। कार्यक्षेत्रों में प्रगति, लाभ से अधिक खर्च। भाग्यफल कमजोर है, अनुकूलता हेतु पीपलवृक्ष का पूजा तथा गणपतिस्तोत्र का पाठ करें।



तुला राशि - शारीरिक-मानसिक कष्ट एवं व्यथा, सम्पूर्ण महिना संघर्ष परन्तु उत्साह बना रहेगा, मातृसुख, संतानसुख, पारिवारिक सुख मध्यम, बन्धु-बान्धवों का सुख, योजनाएँ असफल होंगे। अपने बुद्धि-विवेक को धैर्य पूर्वक संचालन करें वरना हानि हो सकती है, गृहस्थजीवन सुखमय रहेगा, भाग्य प्रबल, कार्यक्षेत्रों में प्रगति।



वृश्चिक राशि - सेहत गड़बड़, रक्त-पित्त विकार होने कि संभावना, धैर्य बना रहेगा, पारिवारिक सुख, गृहस्थजीवन सुखमय रहेगा, धन-सम्पत्तिलाभ, संतानसुख, भाग्य एवं कारोबार क्षेत्रों में तरक्की। बन्धु-बान्धव, इष्टमित्रों का सहयोग, रोगभय, नौकरी क्षेत्रों में पदोन्नति, मातृकष्ट, जमीन जायदाद लाभ, कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगा रहेगा।



धनुष राशि - चित्त अस्थिर, अपनों का असहयोग, बन्धु-बान्धवों से विवाद, मातृसुख मध्यम, संतानसुख सामान्य रहेगा। गृहस्थजीवन में परेशानी, पारिवारिक कलह, कार्यक्षेत्रों में बाधा, अपने वाणी को नियन्त्रित रखे, उच्चाधिकारियों से मेल मिलाप बना कर रखे। पत्नी से अनबन, छात्रों के लिए उत्तम समय रहेगा। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में मन लगा रहेगा। विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र का पाठ नित्य करें।



मकर राशि - स्वस्थ शरीर, सेहत ठीक, धनागम लगा रहेगा, आमदनी से अधिक खर्च। पारिवारिक कलह, संतानपक्ष की चिन्ता, अपनों का सहयोग, मातृकष्ट, योजना में बाधा होने के कारण मानसिक तनाव बढ़ा रहेगा। शत्रुपक्ष कमजोर, गृहस्थजीवन सुखमय रहेगा, पर्यटन योग। छात्रों के लिए परिश्रम की आवश्यकता, व्यापार में रुकावट। शनिवार को सुन्दर-काण्ड/हनुमानचालीसा के नित्य पाठ से आपके मनोरथ पूर्ण होंगे।



कुंभ राशि - स्वास्थ्य खराब, सिर एवं नेत्रपीड़ा, आमदनी से अधिक खर्च। संतानपक्ष की चिन्ता, पारिवारिक तनाव होने के कारण कष्ट, बन्धु-बान्धव सुख। मातृपीड़ा, असफल योजना, गृहस्थजीवन मध्यम, नेत्र-मूत्रादि रोग, अध्ययन अध्यापन में रुचि, छात्रों के लिए उत्तम समय, जमीन-जायदाद लाभ। अनुकूलता प्राप्ति हेतु लौहमुद्रिका धारण/हनुमानजी का आराधना करें।



मीन राशि - सेहत गड़बड़, अपने वाणी को पूर्ण नियन्त्रण रखें अन्यथा क्रोध-कलह बढ़ेगा, अपमान की स्थिति बनी रहेगी, पारिवारिक सुख मध्यम, धनागम में बाधा एवं हानि। गृहस्थजीवन कष्टप्रद होगा, मानसिक तनाव बना रहेगा, संतानसुख, पूर्व योजना सफल होंगे, कार्यक्षेत्रों में प्रगति। शत्रुपक्ष कमजोर है परन्तु सावधान रहे, भाग्यफल मध्यम, छात्रों के लिए समय अनुकूल है।

(नीतिकथा)

दो अजीब सवाल

- श्री के.रामनाथन

मंगलापुरम नामक एक हरे-भरे गाँव में परमेश्वर नाम के एक व्यक्ति रहता था। वह उस गाँव का सबसे बड़ा अमीर था। उसके पास विशाल महल था। घर के चारों ओर हरे-भरे धान के खेत और नारियल के बाग थे। परमेश्वर केवल अमीर ही नहीं थे, बल्कि अपनी कड़ी मेहनत से ऊँचे उठे थे। उनके सुनील और अनुज नाम के दो बेटे थे। बड़े बेटे सुनील, अपने पिता की तरह ही परिश्रमी था। वह सुबह जल्दी उठकर खेतों में चला जाता था। वह खेत में सभी काम वब बहुत जिम्मेदारी से देखता था। अपने पिता के प्रति उसके मन में असीम सम्मान और आदर था। लेकिन, छोटा बेटा अनुज इसके बिल्कुल विपरीत था।

परिश्रम करना उसे नीम की कड़वाहट जैसा लगता था। दिन भर सोना और फिजूलखर्ची करना, यही उसका आलस्य से भरा जीवन था। पिता परमेश्वर ने उसे कई बार समझाया। उन्होंने बहुत समझाया कि, ''अनुज, जो व्यक्ति मेहनत करना नहीं जानता, उसके हाथ में पैसा वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे फूटे हुए घड़े से पानी बह जाता है।'' लेकिन, अनुज ने अपने पिता की बात की ओर कभी कोई ध्यान नहीं दिया।

छोटे बेटे के आलस्य ने परमेश्वर के मन को बहुत दुखी कर दिया। वह दिन-रात इस चिंता में डूबा रहता था कि, ''मेरे बाद मेरी कड़ी मेहनत की प्रतीक यह संपत्ति अगर किसी अयोग्य व्यक्ति के हाथ में चली गई, तो वह उसे भी बर्बाद कर देगी और इस समाज को भी खराब कर देगी।'' इसी मानसिक चिंता के कारण, वृद्ध परमेश्वर बीमार होकर बिस्तर पर पड़ गया और उसने एक पक्का निर्णय भी किया।

उसने मन ही मन योजना बनाई कि वह अपनी सारी संपत्ति केवल योग्य बेटे को ही देगा। इसके लिए उसने एक गुप्त वसीयतनामा तैयार किया।

उस गाँव के मुखिया सर्वेश्वर, परमेश्वर के बचपन के मित्र थे। वे बहुत ही ईमानदार और वफादार व्यक्ति थे। एक शाम, परमेश्वर ने अपने मित्र सर्वेश्वर को चुपके से अपने घर बुलाया। उसने अपने कमजोर हाथों से अपनी वसीयत सर्वेश्वर को सौंप दी।

परमेश्वर ने आँखों में आँसू भरकर कहा, ''मित्र, मेरा अंतिम समय निकट है। मेरे दोनों बेटों में से जो मेरी मेहनत की कीमत समझता है, मेरी संपत्ति उसी के पास जानी चाहिए। मेरे मरने के बाद, इस वसीयत में लिखी शर्तों के अनुसार काम करना और संपत्ति सही बेटे को सौंप देना। यह मेरी आखिरी इच्छा है।'' गाँव के मुखिया सर्वेश्वर ने अपने मित्र को आश्वासन दिया, ''मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही न्यायपूर्वक इस वसीयत को पूरा करूँगा।'' कुछ ही दिनों बाद परमेश्वर ने शांति से अपनी आँखें मूँद लीं।

परमेश्वर की मृत्यु को एक सप्ताह बीत चुका था। अंतिम संस्कार के सारे कार्य पूरे होने के बाद, गाँव के मुखिया सर्वेश्वर परमेश्वर की हवेली पर आए। वहाँ सुनील और अनुज दोनों बैठे थे। सर्वेश्वर ने दोनों को अपने पास बुलाया।

उन्होंने कहा, ''बच्चों, तुम्हारे पिता मरने से पहले मुझे एक वसीयत सौंपकर गए थे। इसमें उन्होंने एक मुख्य शर्त रखी है। वे इस सारी संपत्ति को तुम दोनों में बराबर-बराबर बांटना नहीं

चाहते थे। बल्कि, उन्होंने दो अजीब से सवाल पूछे हैं, जो भी इन सवालों का सही जवाब देगा, यह हवेली, खेत और सारी संपत्ति पूरी तरह से उसी की हो जाएगी।''

यह सुनकर दोनों हैरान रह गए। उन्होंने उत्सुकता से पूछा, ''श्रीमान, हमारे पिता ने क्या सवाल पूछे हैं? कृपया हमें बताएँ।''

सर्वेश्वर ने अपने हाथ में रखी वसीयत को देखकर पढ़ना शुरू किया। पहला सवाल, ''वह कौन सा जल है जो न तो आसमान देता है और न ही बादल?''

दूसरा सवाल, ''वहाँ, उस मेज पर रखी चांदी की थाली में नीम की सात सूखी लकड़ियाँ रखी हैं। उसका गहरा अर्थ क्या है?''

इन सवालों को सुनकर दोनों भाई शांत हो गए। उन दोनों बेटों ने कहा, ''श्रीमान, हमें इन सवालों के जवाब देने के लिए तीन दिन का समय चाहिए।'' सर्वेश्वर भी इसके लिए सहमत हो गए और वहाँ से चले गए।

छोटे बेटे अनुज को अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं था, लेकिन लालच ने उसे अंधा कर दिया था। उसने गाँव की सीमा पर के जंगल में एक पेड़ के नीचे तपस्या का ढोंग कर रहे एक ढोंगी जादूगर से मुलाकात की।

अनुज ने उस तांत्रिक को अपने पिता के दोनों सवाल बताए। उसने लालच देते हुए कहा, ''स्वामी, यदि आप मुझे इन दोनों सवालों के सही जवाब सिखा दें, तो संपत्ति मिलने के बाद मैं आपको बहुत सारा सोना और धन इनाम के रूप में दूँगा।''

धन के लालची उस तांत्रिक ने कुछ देर सोचने का नाटक किया। फिर, उसने एक लोटा लिया और कहा, ''पुत्र, चिंता मत करो। पहले सवाल का जवाब यह रहा।'' उसने कहा, ''यह पानी उस ऊँचे पहाड़ की चोटी पर, एक ऐसे पत्थर के गड्ढे में जमा था जहाँ इंसानों को आना-जाना नहीं है। यह बारिश से नहीं आया, बल्कि पत्थर से रिसा है। इसलिए, यही वह पानी है जो न आसमान ने दिया और न बादल ने।'' यह कहकर उसने उसे एक कप में डाल दिया।

फिर दूसरे सवाल के लिए उसने कहा, ''वे सात नीम की लकड़ियाँ केवल सूखी लकड़ियाँ हैं। चूंकि वे सूख चुकी हैं, इसलिए वे किसी काम की नहीं हैं और उन्हें फेंक दिया जाना चाहिए, ऐसा अपने मुखिया से कह देना। संपत्ति तुम्हें ही मिलेगी।'' उसने यह गलत जवाब सिखाया। अनुज बहुत खुशी-खुशी गाँव लौट आया।

दूसरी ओर, बड़े बेटे सुनील अपने पिता के कमरे में ही बैठा रहा और पिता द्वारा सिखाई गई बातों और उनके स्वभाव के बारे में सोचकर, तीन दिनों तक बिना सोए गहराई से विचार करता रहा।

तीन दिन बीत गए। गाँव के मुखिया सर्वेश्वर फिर से परमेश्वर के घर आए। सर्वेश्वर ने दोनों बेटों की ओर देखा और कहा, ''समय आ गया है, अपने-अपने जवाब बताओ।''

हमेशा की तरह, लालची छोटा बेटा अनुज आगे आया। अपने हाथ में प्याला दिखाते हुए उसने गर्व से कहा, ''श्रीमान! मेरे पिता द्वारा पूछे गए पहले सवाल का जवाब यह रहा। इस प्याले में जो पानी है, वही पानी है जिसे न तो आसमान ने दिया और न बादल ने। मैं इसे जंगल के एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर पत्थर के गड्ढे से लेकर आया हूँ।'' उसने आगे कहा, ''दूसरे सवाल का जवाब यह है कि उस चांदी की थाली में रखी नीम की सात लकड़ियाँ सूखी हैं। वे किसी काम की नहीं हैं, उन्हें कचरे में फेंक दिया जाना चाहिए।'' यह कहकर वह सीना तानकर खड़ा हो गया।

गाँव के मुखिया सर्वेश्वर मुस्कुराए। उन्होंने उसे इनकार करते हुए कहा, ''अनुज, तुम्हारे पिता ने वसीयत में जो जवाब लिखा है, वह यह नहीं है। तुम किसी जादूगर की बातों में आकर धोखा खा गए हो। तुम्हारे जवाब पूरी तरह गलत हैं।'' अनुज का चेहरा उतर गया।

इसके बाद, सर्वेश्वर ने सुनील की ओर देखा और पूछा, ''सुनील, तुम्हारा क्या जवाब है?''

सुनील विनम्रता से खड़ा हुआ, हाथ जोड़कर बोला, ''श्रीमान, पिछले तीन दिनों से गहराई से सोचने के बाद मुझे जो जवाब मिला है, वह यह है, पहले सवाल का जवाब 'गाय का दूध' है।

बादल और आसमान बारिश के रूप में पानी देते हैं। लेकिन, गाय धरती की घास खाकर अपने शरीर के भीतर हमें दूध रूपी अमृत जल देती है। यह वह दिव्य जल है जिसे न तो आसमान देता है और न ही बादल।''

''दूसरे सवाल का जवाब, वह चांदी की थाली हमारे पूर्वजों द्वारा अपनी कड़ी मेहनत से जमा की गई संपत्ति को दर्शाती है। उसमें रखी नीम की सात सूखी लकड़ियाँ हमारी सात पीढ़ियों को दर्शाती हैं। नीम की लकड़ी जब तक हरी रहती है तभी तक उसकी कीमत होती है, सूख जाने पर वह जलाने के भी काम नहीं आती।''

''इसी तरह, पूर्वजों द्वारा जमा की गई संपत्ति चाहे कितनी भी क्यों न हो, यदि आने वाली पीढ़ी मेहनत न करके आलसी हो जाए, तो उस सूखी लकड़ी की तरह वंश भी नष्ट हो जाएगा और संपत्ति भी बर्बाद हो जाएगी। मेरे पिता ना हमें यही बात समझाने के लिए उसे वहाँ रखा था।''

सुनील का जवाब सुनकर गाँव के मुखिया सर्वेश्वर की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। सर्वेश्वर ने वसीयत खोली और कहा, ''सुनील, तुमने जो कहा उसे तुम्हारे पिता ने अपनी वसीयत में यही लिखा है। तुम न केवल अपने पिता की संपत्ति के, बल्कि उनके विचारों और उनकी मेहनत के रहस्य को भी पूरी तरह समझते हो। इसलिए, तुम ही इस सारी संपत्ति के पूर्ण रूप से हकदार हो।'' यह घोषणा करके उन्होंने संपत्ति के अधिकार उसे सौंप दिए।

सब कुछ खो चुका अनुज अपने लालच और आलस्य के बारे में सोचकर सिर झुकाए खड़ा रहा। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया था।

लेकिन, अच्छे गुणों से भरपूर सुनील ने अपने भाई का साथ नहीं छोड़ा। वह अनुज के पास गया और उसने उदारता से कहा, ''भाई, तुम उदास मत हो। यह संपत्ति सिर्फ मेरी नहीं है। इसमें तुम्हारा भी आधा हिस्सा है। लेकिन, अब से अपना आलस्य छोड़ दो। मेहनत की कीमत समझो और हमारे साथ खेत में काम करो। हम अपने पिता द्वारा जोड़ी गई इस संपत्ति को अपनी मेहनत से और बढ़ाएंगे।''

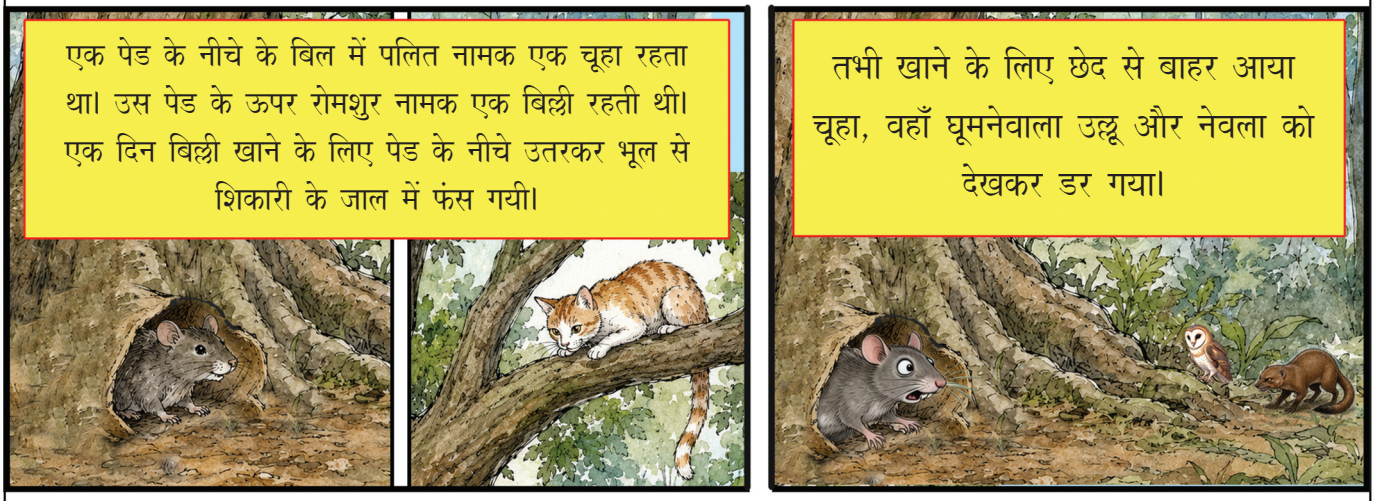
भाई का प्यार देखकर अनुज भावुक हो गया। उसने अपनी आलस्य भरी हरकतों के लिए अपने भाई के पैर छूकर माफी मांगी। उस दिन से अनुज पूरी तरह बदल गया। वह बड़े भाई सुनील के साथ सुबह जल्दी उठकर खेत में जाने लगा और कड़ी मेहनत करने लगा। दोनों भाई अपनी मेहनत के बल पर गाँव के सबसे अमीर और अच्छे इंसान बनकर कई वर्षों तक जीवित रहे।

नीति - भला सोचनेवाले को सदा भला ही होता है।

चित्रकथा

दुश्मन से दोस्ती एक हद तक

तेलुगु मूल - 'कलारत्न' डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी







जाल की रस्सियों को काटने के बाद तुम क्या सोचोगे किसे पता? जहाँ दुश्मनी होती है, वहाँ संधि (समझौता) करने के बाद पूरी तरह से भरोसा करना ठीक नहीं है।

हाय! मैं तुम्हे हानि नहीं करूँगा। मुझ पर भरोसा करके जाल की रस्सियों को जल्दी कतरो...

डरो मत! जाल की रस्सियों को काटडालूँगा।

चूहा जल्दी-जल्दी जाकर रस्सियों को कतरा, बिल्ली तेजी से पेड पर चढ गयी।

हम दोनों अब दोस्त हैं। मुशीबत में दोनों एक दूसरे की मदद करलिए थे। दोनों मिलकर खुशी से रहेंगे। मुझे देख कर डरो मत...

अरे बिल्ली! मेरी बात सुनो। तुम्हारा दिल कब किस प्रकार बदलेगा यह किस को पता है?

हाय रे! इस प्रकार कहना क्या धर्म है? मेरी रक्षा तुम ने किया इसलिए मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा।

बिल्ली न.. न.. न! तुम्हारी वजह से मैं जीवित हूँ। मेरी वजह से तुम जाल से मुक्त हुए। अपनी दोस्ती वहाँ तक ही सीमित है। अब इससे भी ज्यादा तुम्हारे पास नहीं आऊँगा। क्यों कि मैं तुम्हारा भोजन है न?

2

चूहा की बात सच है। वह मेरा भोजन है। मेरी सोच कब कैसा बदलेगा मालूम नहीं...?

नीति : जरूरत पडने पर दुश्मन की मदद कर सकते हैं। लेकिन दुश्मन (शत्रु) को पूरी तरह से भरोसा नहीं कर सकते।



तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।



प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-49

1) गरुड़ पंचमी के दिन तिरुमल में कौन सा वाहन सेवा को संपन्न करते है?

ज).....

2) विनता और कद्रू का पति का नाम क्या है?

ज).....

3) गरुत्मंत ने स्वर्ग से किस पदार्थ को लाया?

ज).....

4) भगवान विष्णु के हाथ में हुए रक्षणात्मक चक्र आयुध का नाम क्या है?

ज).....

5) भगवान विष्णु का वाहन का नाम क्या है?

ज).....

6) भगवान विष्णु-ज्ञान प्रदाता के रूप में किस अवतार को धारण किया?

ज).....

7) श्रावण पूर्णिमा के पहले शुक्रवार को संपन्न करने वाला व्रत क्या है?

ज).....

8) केरल के प्रसिद्ध फसल का उत्सव का नाम क्या है?

ज).....

9) राखी पूर्णिमा कब मनाते है?

ज).....

10) वैखानस आगम का परिचयक का नाम क्या है?

ज).....

11) गरुड़ का माताजी का नाम क्या है?

ज).....

12) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?

ज).....

13) कर्णाटक में नार्ली पूर्णिमा उत्सव को कब मनाते है?

ज).....

14) फलित नामक चूहा ने किसको संरक्षण किया?

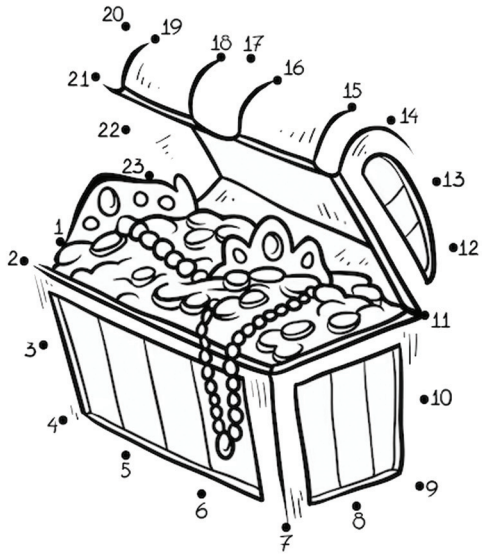
ज).....

15) तिरुमल में विराजित भगवान का नाम क्या है?

ज).....



बिंदी को जोड़िए



रंगों को भरिये क्या!



उल्टा-पुल्टा शब्दों का उपयोग करके कहावत बनाइए।



हर चीज़ का धैर्य समाधान है

ધૈર્ય દરેક વસ્તુ નું સમાધાન છે

यहाँ 1 से 10 तक कुछ उदाहरण पुराणों से, इतिहासों से और संप्रदायिक विषयों के बारे में जानकारी का प्रयत्न है।

क्र.सं.	स्थान	उदाहरण के रूप में पुराण/इतिहास
1.	एक - एक पत्नी व्रत - श्रीराम	(अपनी पत्नी सीता के प्रति समर्पित)
2.	दो - जय और विजय	(श्रीवैकुण्ठ द्वार का संरक्षक है।)
3.	तीन - त्रीमूर्ति	(ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर)
4.	चार - चतुर्मुख ब्रह्म	(चार मुख वाले ब्रह्म देव)
5.	पाँच - पंचपांडव	(युधिष्ठिर, भीष्म, अर्जुन, नकुल और सहदेव)
6.	छे - षण्मुख भगवान	(छे मुखवाले सुब्रह्मण्यस्वामी)
7.	सात - सप्तऋषि	(सात महान ज्ञानी ऋषि है)
8.	आठ - अष्टलक्ष्मी	(माँ लक्ष्मी का आठ रूप है)
9.	नौ - नवदुर्गा	(माँ दुर्गा का नव रूप है)
10.	दस - महाविष्णु का दस अवतार	(भगवान विष्णु के दस अवतार)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)



चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-; विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)



धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

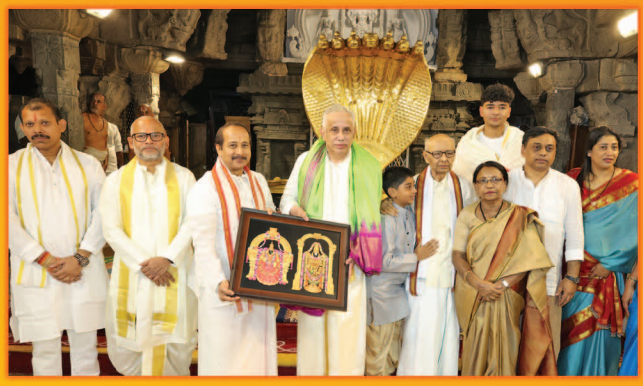
प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC



दि.11-06-2026 को तिरुमल श्री बालाजी को आं.प्र. राज्य के राज्यपाल माननीय श्री एस.अब्दुल नजीर जी ने दर्शन किया। इस संदर्भ में वेदपंडितों ने वेदाशीर्वचन किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ. और सी.वी. अण्ड एस.ओ. ने चित्रपट को राज्यपाल जी को सौंपा दिया। आदि अन्य अधिकारीगण ने इस संदर्भ में भाग लिया।



दि.12-06-2026 को आं.प्र. राज्य के हैयकोर्ट के चीफ जस्टिस लीसा गिल जी ने भगवान बालाजी को दर्शन किया। वेदपंडितों ने विदाशीर्वचन किया। इस संदर्भ में चीफ जस्टिस जी को ति.ति.दे. का ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ., और सी.वी. अण्ड एस.ओ. ने चित्रपट को सौंपा दिया। आदि अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।















जून 21 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दि.07-06-2026 से दि.21-06-2026 तक तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने 'ति.ति.दे. योगानंद' नामक से विविध योग कार्यक्रमों को तिरुपति में विविध प्रांतों में वैभवोपेत रूप से आयोजित की गयी दृश्य मालिका।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY, Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-07-2026 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

